सम्पादकीय
झोले में प्रज्ञा अभियान बने युग निर्माणी कार्यकर्त्ता की पहचान 2

युगतीर्थ की दिव्य चेतना के सान्निध्य में नई स्थापनाएँ, उभरी सत्प्रेरणाएँ 6

गंगातट पर 51,000 दिये जलाकर मनाया उत्तराखण्ड का रजत जयंती समारोह 8

नदियों के संगम पर केन्द्रित भारत सरकार के कार्यक्रम में शान्तिकुञ्ज की भागीदारी 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 दिसम्बर 2024

वर्ष : 37, अंक : 11
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 27 नवम्बर 2024
वार्षिक चंदा : ₹ 80/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-
प्रति अंक : ₹ 4/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।

जीवन को श्रेष्ठ बनाना चाहते हैं तो तप कीजिए

अध्यात्म पथ के पथिकों के लिए परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा दिये गए बड़े महत्त्वपूर्ण दिशा-निर्देश

दृष्टिकोण रचनात्मक रखा जाये

लोकसेवी को अपना दृष्टिकोण रचनात्मक रखना चाहिए। आत्मप्रचार के झमेले से दूर ऐसे रचनात्मक कार्यक्रमों को ही हाथ में लिया जाये, जिनमें लोगों का वास्तव में हित होता हो। समाज की उल्लेखनीय सेवा करने में अब तक वे ही लोग सफल हो सके हैं, जिन्होंने रचनात्मक दृष्टिकोण अपनाया तथा आत्मप्रचार और निन्दा-आलोचना से दूर रह कर सेवा करते रहे।

हीरालाल शास्त्री जी ने अपने पास उपलब्ध साधनों से ही वनस्थली विद्यालय का निर्माण आरम्भ किया। उन्होंने अपनी योजना न किसी अखबार में छपवायी और न उसके लिए कहीं प्रचार करने गये। कार्य के उद्देश्य और व्यक्तित्व की प्रामाणिकता को देखकर उन्हें धीरे-धीरे जन-सहयोग भी मिलता गया। फलस्वरूप वनस्थली विद्यापीठ खड़ा हो गया, जो आज कन्या शिक्षा के लिए देश का एक प्रतिष्ठित शिक्षा संस्थान माना जाता है। स्वामी केशवानन्द जी द्वारा हाथरस में कन्या गुरुकुल की स्थापना, साँगरिया विद्यापीठ, बाबा साहब आमटे द्वारा पूना में खोला गया कुष्ठ आश्रम, झाँसी का लक्ष्मी व्यायाम मन्दिर आदि अनेक ऐसे उदाहरण हैं, जिन्होंने उनके संस्थापकों को निःस्वार्थ सेवा और रचनात्मक दृष्टिकोण के कारण महापुरुषों की श्रेणी में खड़ा कर दिया।

यह तथ्य भली-भाँति हृदयंगम कर लेना चाहिए कि सेवाधर्म के निर्वाह में बाह्य परिस्थितियों की तुलना में स्वयं की वृत्तियों से अधिक संघर्ष करना पड़ता है। शास्त्रकारों ने इसे ही अलंकारिक रूप से साधना-समर नाम दिया है। जो अपनी अन्तः दुष्प्रवृत्तियों से लड़ते हुए अन्तःकरण परिष्कृत करने में सफल होता है, वस्तुतः वही सच्चा पुरुषार्थी है। बाधा-अवरोध तो किसी न किसी रूप में सदा बने ही रहेंगे, यदि अपनी प्रवृत्तियाँ एवं गतिविधियाँ श्रेष्ठ हों, तो बाहरी कठिनाइयाँ सेवा के मार्ग में किसी भी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं कर सकतीं।

तप से शक्ति, शक्ति से सिद्धि

अध्यात्म क्षेत्र की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों, अनुदान, वरदानों को प्राप्त करने के सम्बन्ध में लूट-खसोट की नीति छोड़कर वस्तु स्थिति समझनी चाहिए और यदि सचमुच कुछ प्राप्त करना हो तो उसकी पात्रता अर्जित करने और कीमत चुकाने के लिए तैयार होना चाहिए। अध्यात्म क्षेत्र में रुचि रखने वाले हर व्यक्ति को 'तप से शक्ति-शक्ति से सिद्धि' का सिद्धान्त सौ बार, हजार बार समझना, हृदयंगम करना और गाँठ बाँधना चाहिए।

तप का अर्थ है उच्च उद्देश्यों के लिए कष्ट सहना। इसे शारीरिक उत्पीड़न न समझा जाये, वरन् अपनी रुझानों, आदतों और गतिविधियों में घुसी हुई संकीर्णता, विपन्नता को उदारता, व्यापकता में परिणत करने के निश्चय को व्यावहारिक रूप देने में जो कुसंस्कार बाधक होते हैं, उनसे जूझा, समझा जाये। जूझने में कुछ तो अपनी भी हानि होती है, कुछ तो अपने को भी चोट लगती है। इसी को स्वीकारने, अपनाने में जो अड़चनें आती हैं, उनका सामना करने का सिद्धान्त ही तपश्चर्या कहलाता है। आत्म प्रताड़ना के रूप में इन दिनों काया-कष्टों को ही तप कहा जाने लगा है। इस मान्यता को अन्धविश्वास के अतिरिक्त और कुछ कहने, समझने की आवश्यकता नहीं है।

उदारता अपनायें, मूर्खता नहीं

अध्यात्म क्षेत्र में आदि से अन्त तक उदार अनुदान वरदान बाँटने वाली सत्ताओं की कभी कमी नहीं रही है और न रहेगी। वे लेने वालों की तुलना में देने के लिए कहीं अधिक व्याकुल रहती हैं, पर दें किसे? अनर्थ के लिए कुपात्रों की मनोकामना पूर्ण करने की आशा दैवी शक्तियों से नहीं करनी चाहिए। यदि वे वस्तुतः महान और सर्वशक्तिमान हैं तो यह बात भी गाँठ बाँध लेनी चाहिए कि उनमें पात्रता की परख के लिए अत्यधिक तीक्ष्ण बुद्धि भी है।

कोई अपनी बेटी को चाहे जिसके पल्ले नहीं बाँध देता, वरन् कई कसौटियों पर कसने के उपरान्त यह बात गम्भीरतापूर्वक सोचता है कि जामाता बनाने के लिए कौन खरा सिद्ध होगा। ठीक उसी तरह कोई देवता या तपस्वी मात्र दर्शन करने भर की कीमत पर किसी को निहाल कर दे या धूप, दीप, नैवेद्य, नमस्कार की कीमत पर अपनी तप सम्पदा लुटाने की मूर्खता करते रहें, धूर्तों-जालसाजों के शिकार बनते रहें, ऐसा नहीं होता।

अध्यात्म क्षेत्र की पात्रता, जो दैवी वरदानों को अपनी सामर्थ्य से बलात् खींच लाती, घसीट बुलाती है, उसे एक शब्द में सत्प्रयोजनों में बरती गई उदारता समझी जा सकती है। सत्प्रयोजनों के लिए उदार अनुदान ही वह बीजारोपण है, जिसके बदले में दैवी अनुग्रह की बहुमूल्य फसल काटी जा सकती है। जो बोने में कंजूसी करेगा, वह धन-धान्य से कोठे कैसे भरेगा?

बोओ और काटो

जो सच्चाई समझ सकें, वे दो में से एक काम करें। वे विशुद्ध भौतिकवादियों की तरह उदारता को अस्वीकार करते हुए श्रम के बदले सफलता पाने की बात सोचें और देवताओं के सामने मनोकामना पूर्ति के लिए नाक रगड़ना, दाँत निपोरना बन्द कर दें। कहने को यह नीति अश्रद्धा एवं नास्तिकता प्रतीत होती है पर है यथार्थवादी । इसमें भ्रान्तियाँ-भटकाव नहीं हैं। दूसरा रास्ता उन अध्यात्मवादियों, तत्त्वज्ञानियों का है, जो बोने-काटने पर विश्वास करते हैं और मूल्य देकर खरीदने की विश्व व्यवस्था पर विश्वास करते हैं। वस्तुतः ऐसे लोग ही अध्यात्म क्षेत्र में प्रवेश करके उच्चस्तरीय सफलताएँ पाते, वरदानों के अधिकारी बनते, निहाल बनते और कृतकृत्य होते हैं। अपनी उदारता ही हजार गुनी होकर उच्चस्तरीय विभूतियों के रूप में वापस लौटती है। साधक के अनुदान ही समयानुसार दैवी वरदान बनकर बरसते हैं ।

यों विलास, मोह और अहंकार की पूर्ति में तो असंख्यों को अशर्फियाँ लुटाते देखा जा सकता है। बदले की भावना से रिश्वत अथवा प्रलोभन देने का प्रचलन भी खूब है। चमचों, गुण्डों को जानबूझकर और ठगों के चित्र-विचित्र जाल-जंजालों में फँसकर अनजाने में बहुत कुछ लुटाया जाता रहा है, पर उसे कोई उदारता थोड़े ही कहा जा सकता है। जिसके पीछे उत्कृष्टता, आदर्शवादिता का परिपोषण करने वाली भावभीनी दूरदर्शिता न हो, तो उसे उदारता नहीं कहा जा सकता। अपव्ययी और उदारों की क्रिया एक जैसी दिखती भले ही है, पर उसमें वस्तुतः जमीन-आसमान जैसा अन्तर है।

पात्रता की साधना करने के लिए ही अध्यात्म के हर प्रयोग के साथ अनुदानों की अनिवार्यता जोड़ी गई है। अनुष्ठान को ही लें, उसके साथ यज्ञीय परमार्थ, ब्रह्मभोज, प्रसाद वितरण की अविच्छिन्नता है। जो केवल अक्षरों की रटन करके मालाओं की संख्या तो पूरी करते हैं, पर उसके साथ वाले उदार अनुदान से मुँह मोड़ लेते हैं, वे घुना बीज बोने वालों की तरह अभीष्ट प्रतिफल से वंचित ही रहते हैं। देव मंदिर में जाकर देवता के चरणों पर कुछ न कुछ चढ़ाने की भी अनिवार्यता है अन्यथा पुण्य के बदले कृपणताजन्य पाप लगने के शास्त्र विधान को भी ध्यान में रखकर चलना होगा।

भारतीय तत्त्वदर्शन में एक भी ऐसा प्रयोजन नहीं है जिसमें प्रयोजनों के निमित्त कुछ न कुछ त्याग करने की अनिवार्यता जुड़ी न हो। यह उचित भी है और आवश्यक भी। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। सत्प्रवृत्तियों के आधार पर ही मनुष्य को आगे बढ़ते-बढ़ते आज के सभ्य मनुष्य स्तर तक पहुँचने का अवसर मिला है। उस ऋण को चुकाया ही जाना चाहिए। सत्प्रवृत्ति संवर्धन के लिए उदार अंशदान, समयदान की प्रक्रिया को दैनिक जीवन में शरीर एवं परिवार पोषण की जिम्मेदारियों की तरह ही वहन करना चाहिए। विशेष आवश्यकता आ पड़ने पर तो निजी सुविधाओं में कटौती करके भी अनुकरणीय उदारता का परिचय देना चाहिए। वस्तुतः ऐसी रीति अपनाकर ही कोई सच्चे अर्थों में अध्यात्मवादी बनता है।

वाङ्मय खण्ड 28-सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य-1, पृष्ठ 6.18-20 से संकलित-संपादित

प्रज्ञा अभियान की सदस्यता का नवीनीकरण करा लीजिए

24 अंक
₹ 80/-वार्षिक
₹ 2000/- में
25 अंक

प्रज्ञा अभियान के अधिकांश ग्राहकों का वार्षिक चंदा आगामी दिसम्बर-जनवरी माह में समाप्त हो रहा है। कम्प्यूटरीकृत व्यवस्था होने के कारण चंदा समाप्त होने पर प्रज्ञा अभियान भेजा जाना स्वतः ही बंद हो जाता है। अतः इस असुविधा से बचने के लिये अपनी सदस्यता का नवीनीकरण यथाशीघ्र करा लीजिए।

छोटा प्रयास, किन्तु सफलता महान

क्यों और कैसे? यह समझने के लिए अवश्य पढ़ें इस अंक का पृष्ठ क्रमांक 2

जिज्ञासाओं के समाधान एवं सदस्य बनने की विधि जानने के लिए संपर्क कीजिए 92583 69413

पाक्षिक झोले में प्रज्ञा अभियान बने युग निर्माणी कार्यकर्त्ता की पहचान

परम पूज्य गुरुदेव और उनके मिशन के प्रति आस्था है तो कम से कम 5 लोगों तक उनके विचारों को पहुँचाइये

लक्ष्य का पुनर्बोध

प्रज्ञा अभियान के गत (16 नवम्बर) के अंक में यह तथ्य समझाने का प्रयास किया गया था कि इस युग में जितनी भी समस्याएँ हैं, चाहे वे व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक या राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर की हों, उन सबका एकमात्र कारण है मानवीय चिंतन, चरित्र में आई विकृति। परम पूज्य गुरुदेव का अवतरण जन-जन में सद्बुद्धि जगाकर इसी विकृति को दूर करने के लिए हुआ है। गायत्री उपासना, साधना से लोगों के विचार बदलेंगे, भावनाएँ परिष्कृत होंगी, चिंतन-चरित्र उत्कृष्ट बनेगा, तभी मानव में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण का संकल्प साकार होगा। जीवन में सुख, शान्ति, समृद्धि किसे नहीं चाहिए? लेकिन यह प्राप्त तभी होगी, जब इस दिशा में ईमानदारी और समझदारीपूर्वक साहसी कदम बढ़ाये जायें।

पूजा-पाठ तो हर कोई करता है, लेकिन गायत्री का सच्चा उपासक वह है, जिसके भीतर हंसवृत्ति जागे। जब भगवान पर विश्वास होता है तो स्वतः ही बुराइयों से नफरत होने लगती है और अच्छाइयों-आदर्शों की ओर कदम बढ़ने लगते हैं। जिसके अंदर परमार्थपरायणता का भाव उभरता है, उसमें दूसरों के कष्टों को दूर करने की, भटकों को सन्मार्ग दिखाने की अकुलाहट होना स्वाभाविक ही है।

युग निर्माण आन्दोलन से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति को हंसवृत्ति अपनानी ही चाहिए। हंस दूध और पानी के मिश्रण में से दूध ग्रहण कर लेता है और पानी छोड़ देता है। उसी प्रकार इस संसार में गुड़-गोबर सब मिला हुआ है। गायत्री का सच्चा साधक वही है जो हंस की भाँति अवांछनीय तत्त्वों को छोड़ दे और उत्कृष्टता की ओर अग्रसर होता चले। उसे जप, उपासना, स्वाध्याय आदि के साथ अपने भीतर के लोभ, मोह, वासना, अहंकार आदि के बंधनों को ढीला कर लोकमंगल के लिए कदम बढ़ाने ही चाहिए।

पू. गुरुदेव का दृष्टिकोण समझें

अपने मिशन की सबसे छोटी संगठनात्मक इकाई है मण्डल। परम पूज्य गुरुदेव ने युग निर्माण आन्दोलन के विस्तार के लिए पाँच पुरुष/महिलाओं का मण्डल गठित कर उन पाँचों सदस्यों से अपने साथ कम से कम पाँच-पाँच अन्य सदस्य जोड़ने और नित्य की गतिविधियाँ (जप, आरती, स्वाध्याय, सत्संग, यज्ञ, अनुष्ठान एवं प्रचार-प्रसार की गतिविधियाँ) चलाने के निर्देश दिये। इसके साथ उन्होंने मण्डल से जुड़े प्रत्येक कार्यकर्त्ता अथवा परिजन से प्रत्येक वर्ष **एक से पाँच और पाँच से पच्चीस के क्रम में बढ़ते जाने का आह्वान भी किया था।** इस सूत्र को आज भी भलीभाँति समझने और अपनाने की आवश्यकता है।

प्रचार कर लेना अलग बात है। प्रचार तो टेलीविजन और समाचार पत्रों के माध्यम से भी हो जाता है। लेकिन युग निर्माण जैसा महान कार्य सम्पन्न करना हो तो केवल प्रचार से काम नहीं चलेगा। इसके लिए जन-जन के मन में आस्था के बीज बोने होंगे और उनके पल्लवित, पुष्पित, फलित होने तक के लिए अथक परिश्रम करना होगा।

हम परम पूज्य गुरुदेव के दृष्टिकोण को समझें। वे चाहते तो अपने मिशन के प्रचार-प्रसार के लिए आधुनिक तौर-तरीके अपना सकते थे। अखण्ड ज्योति पत्रिका को अन्य पत्रिकाओं की तरह आकर्षक बनाकर पुस्तक विक्रेताओं को मोटा कमीशन देकर उसका प्रचार कर सकते थे। परम पूज्य गुरुदेव जैसे क्रान्तिकारी विचार और उनका अमृततुल्य चिंतन इस युग में भला कहाँ मिलता है?

आयुर्वेदिक दवाएँ सही अनुपान और उचित परहेज हो, तभी प्रभावशाली होती हैं। परम पूज्य गुरुदेव के विचार क्रान्ति अभियान के साथ भी यही सिद्धान्त जुड़ा दिखाई देता है। उन्होंने अपने साहित्य को अत्यंत सस्ता तथा सर्वसामान्य की पहुँच के भीतर रखा। साहित्य को बेचने की बजाय झोला पुस्तकालयों के माध्यम से घर-घर पहुँचाने पर जोर दिया। अखण्ड ज्योति आदि पत्रिकाएँ सीधे डाक से नहीं भेजीं, अपने कार्यकर्त्ताओं को, आत्मीय परिजनों, शिष्यों को श्रवण कुमार की भूमिका निभाते हुए उनके विचार शरीर को घर-घर, जन-जन तक पहुँचाने के निर्देश दिये और ऐसा ही होता भी रहा।

इन दिनों सोशल मीडिया का बोलबाला है। इसलिए यह बातें अटपटी लग सकती हैं, लेकिन हमें समझना चाहिए कि परम पूज्य गुरुदेव के विचार जब कार्यकर्त्ताओं की भावना और उनके चिंतन, चरित्र की प्रामाणिकता के अनुपान के साथ लोगों तक पहुँचते हैं तो उनका प्रभाव अनेक गुना हो जाता है। पूज्य गुरुदेव के विचार क्रान्तिकारी हैं। लेकिन उन्हें पहुँचाने वाले कार्यकर्त्ताओं के जीवन में, उनकी श्रद्धा में जब वे परिलक्षित होते हैं तो उन विचारों को साहित्य के रूप में प्राप्त करने वालों की आस्था इन विचारों के प्रति कई गुना बढ़ जाती है।

प्रज्ञा अभियान बहुत उपयोगी है

परम पूज्य गुरुदेव के विचारों के विस्तार के लिए अनेक प्रकार के अभियान अपने मिशन द्वारा चलाये जा रहे हैं। पाक्षिक प्रज्ञा अभियान हमारे इन प्रयासों को कई गुना सफलता प्रदान कर सकता है। इन दिनों इस दिशा में गंभीरतापूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। जब हम अखण्ड ज्योति के शताब्दी वर्ष और परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी-2026 को लक्ष्य कर योजनाएँ बना रहे हैं, तो इस कार्य में प्रज्ञा अभियान की उपयोगिता की अनदेखी नहीं ही की जानी चाहिए।

मिशन का प्रभावशाली प्रचार माध्यम

प्रचार पत्रक : प्रज्ञा अभियान अपने मिशन की अन्य पत्रिकाओं की भाँति नहीं है। शान्तिकुञ्ज इसे मिशन के 'प्रचार पत्रक' के रूप में लागत मूल्य से भी लगभग आधी कीमत पर कार्यकर्त्ताओं को उपलब्ध करा रहा है। कारण एक ही है कि यह विचार क्रान्ति का एक सशक्त माध्यम बने, जिससे अधिक से अधिक लोग नवसृजन अभियान में भागीदार बनते चले जायें।

निःशुल्क पहुँचाने की पहल करें : हम बड़े-बड़े यज्ञ, सम्मेलन, शिविर आदि कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं। प्रयोजन एक ही होता है कि लोग परम पूज्य गुरुदेव के विचारों से जुड़ें, उनके व्यक्तित्व युग निर्माणी आदर्शों के अनुरूप ढलें, लोग युग परिवर्तन के लिए हो रहे सामूहिक प्रयासों में सक्रिय भागीदारी निभाने के लिए आगे आयें। इन कार्यक्रमों में लाखों रुपये का खर्च हो जाते हैं। हजारों लोग प्रभावित होते हैं, उनमें आस्था जागती है। इस उभरती हुई आस्था के पोषण के लिए भी हमें प्रयास करने चाहिए।

हमारे मिशन का प्रमुख अभियान है ज्ञानयज्ञ। जब लोगों को आकर्षित करने के लिए लाखों रुपये खर्च किये जा सकते हैं तो उनकी आस्था के पोषण के लिए भी कुछ बजट होना ही चाहिए। इस बजट में से कार्यक्रमों के आयोजक, जिला संगठन,

शक्तिपीठें, प्रज्ञा मण्डल अपने क्षेत्र में युग निर्माणी आस्थाओं के पोषण के लिए एक लक्ष्य निर्धारित करें और उसी बजट से लोगों तक निःशुल्क प्रज्ञा अभियान पहुँचाने की पहल करें।

किन तक पहुँचायें? : सामान्य-सा सिद्धान्त है कि जब कोई पौधा रोपा जाता है तो रोपने से पहले उसकी सिंचाई, सुरक्षा, निराई-गुड़ाई आदि की भी पूरी व्यवस्था का ध्यान रखा जाता है। हम यज्ञीय कार्यक्रमों, प्रशिक्षण शिविरों, बौद्धिक सम्मेलनों एवं घरेलू संस्कारादि कार्यक्रमों के माध्यम से परम पूज्य गुरुदेव के विचारों का बीजारोपण ही तो करते हैं। इन कार्यक्रमों में आने और दो-चार प्रवचन सुन लेने मात्र से किसी के जीवन में परिवर्तन नहीं आ जाता। अभीष्ट परिणाम पाने के लिए उनकी आस्थाओं का सतत पोषण होना आवश्यक हो जाता है।

पाक्षिक प्रज्ञा अभियान लोगों की आस्थाओं के पोषण का अत्यंत प्रभावशाली माध्यम है। इसे गायत्री की दीक्षा लेने वाले, प्रशिक्षण शिविरों में भाग लेने वाले, संस्कार कराने वाले, गृहे-गृहे यज्ञ अभियान में जुड़ने वाले प्रत्येक व्यक्ति/परिवार तक कम से कम एक वर्ष तक तो नियमित रूप से पहुँचाना ही चाहिए। यह रोपे गए पौधे को खाद-पानी देने जैसा ही कार्य है।

कौन पहुँचायेगा? : गायत्री परिवार के सभी सक्रिय कार्यकर्त्ता एवं गायत्री महामंत्र की दीक्षा लेने वाले सभी परिजन अपने दीक्षा अनुबंधों के अंतर्गत समयदान और अंशदान का संकल्प लेते ही हैं। उन्हें निष्ठापूर्वक इस अनुबंध का पालन करते हुए कम से कम पाँच घरों तक युग चेतना के विस्तार का न्यूनतम व्रत तो निभाना ही चाहिए।

क्यों आवश्यक है? : बड़े कार्यक्रमों में भावनाओं का ज्वार उमड़ता है, लेकिन उन भावनाओं को उद्दीप्त रखने के लिए उनका सतत पोषण जरूरी हो जाता है। जनसंपर्क ही इसका सबसे प्रभावशाली माध्यम है। हर पंद्रह दिन में संपर्क होगा तो संकल्प का पुनःस्मरण होगा। **हर भावनाशील को पाठक, साधक, नैष्ठिक कार्यकर्त्ता के रूप में परिणत करने का यही सरलतम विधान है।** जो उपासना, साधना, आराधना का, बुराइयों को छोड़ने-अच्छाइयों को अपनाने का, सेवा का संकल्प लेते हैं, उन्हें उनके संकल्प की याद बार-बार दिलाई जानी चाहिए।

पू. गुरुदेव-वं. माताजी ने गायत्री परिवार के रूप में एक विराट देव परिवार बनाया है। नए जुड़ने वाले परिजनों में बिना प्रत्यक्ष सम्पर्क किये इन पारिवारिक भावनाओं का पोषण हो ही नहीं सकता। **आप अनुभव करके देख लीजिए,** जब संपर्क होता है, परस्पर चर्चा होती है, तब बात से बात निकलती है। भ्रम-भ्रांतियों का निवारण होता है, उभरती आस्थाओं को बल मिलता है, नए संस्मरण-नए प्रसंगों की चर्चा होती है तो परस्पर श्रद्धा का पोषण होता है, केवल उनकी ही नहीं जिन तक हम पहुँच रहे हैं, वरना उनकी भी जो जनसंपर्क के लिए पहुँच रहे हैं। व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण के लिए यह नितांत आवश्यक है।

आप भी आगे बढ़ेंगे : बिना काम के किसी के घर पहुँचने में संकोच होना स्वाभाविक है। प्रज्ञा अभियान लेकर पहुँचना पुण्यदायी कार्य है। इससे समाज में सम्मान मिलेगा, प्यार बढ़ेगा। सभी व्यक्ति लोगों को मिशन की जानकारी देने में अपने को सहज अनुभव नहीं करते। प्रज्ञा अभियान में गुरुदेव के विचार, मिशन की गतिविधियों के समाचार, भावी सक्रियता के दिशा-निर्देश, सूचनाएँ सब कुछ हैं, जो लोगों के साथ बातचीत करने में आपकी सहायता करेंगी। इस चर्चा से आपकी जानकारी भी बढ़ेगी। जिन प्रश्नों के उत्तर आप लोगों को नहीं दे पाते हैं, उनके विषय में वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं से जानकारी लेने की जिज्ञासा आपके भीतर भी उभरेगी।

प्रज्ञा अभियान के माध्यम से जनसंपर्क बढ़ेगा तो आपको भी अपने समयदान/अंशदान के सदुपयोग का आत्मिक संतोष और आनन्द मिलेगा।

यह बहुत सरल है

परम पूज्य गुरुदेव की हर वर्ष एक से पाँच और पाँच से पच्चीस होने की आकांक्षा के अनुरूप हर कार्यकर्त्ता, दीक्षित परिजन, समयदानी यदि अपने निकटतम 5-5 नए व्यक्तियों को प्रज्ञा अभियान पहुँचाने का संकल्प ले तो इसका पालन कठिन नहीं होगा। इन पाँच लोगों में पड़ोसी, रिश्तेदार, अपने संपर्क के अधिकारी, कर्मचारी, दुकानदार, वकील, डॉक्टर आदि कोई भी हो सकते हैं। इन तक सभी की सहज पहुँच होती है। बस आवश्यकता है तो मन में संकल्प जगाने की। यह छोटा-सा संकल्प देश, समाज और संस्कृति के उत्थान की दिशा में बहुत बड़ा योगदान सिद्ध होगा।

न्यूनतम 25 मँगायें : साधारण डाक से पाक्षिक पहुँच नहीं पाते, इसलिए शान्तिकुञ्ज से न्यूनतम 25 प्रज्ञा अभियान रजिस्टर्ड पोस्ट के माध्यम से भेजे जाते हैं, प्रति अंक 80/- रुपये वार्षिक के हिसाब से जिसकी कीमत 2000/- रुपये होती है। प्रज्ञा मण्डल के 5 व्यक्ति 5-5 पाक्षिक का खर्च वहन करेंगे तो प्रत्येक के हिस्से में मात्र 400/- रुपये वार्षिक का ही खर्च आता है।

हम देवता हैं : परम पूज्य गुरुदेव ने 'बोओ और काटो' के सिद्धान्त पर इतना बड़ा मिशन खड़ा कर दिया। जब हम निःशुल्क पाक्षिक किसी के घर पहुँचाते हैं तो वह भी बीजारोपण ही तो है। अधिकांश लोग तो 80/- रुपये देने में संकोच नहीं करते। यदि तुरंत न भी मिले तो अंशदान के रूप में, यज्ञ या आरती में दक्षिणा के रूप में, ज्ञानघट के रूप में लोगों का अनुदान मिलता ही है।

हम देवता हैं, यह भाव हमारे मन में होना चाहिए। हम लोगों तक चंदा लेने ही नहीं, कुछ देने भी जायेंगे, यह संकल्प हमारे मन में जागना चाहिए। लोग ब्रह्मभोज के लिए करोड़ों रुपये देते हैं। यदि भाव सही होगा तो समर्थ लोगों का साथ भी मिलता चला जायेगा। कठिन कुछ नहीं है, बस प्रज्ञा अभियान को सदैव अपने झोले में रखें। प्रज्ञा अभियान युग निर्माणी कार्यकर्त्ता की पहचान बन जाए तो मिशन का बहुत तेजी से विस्तार होगा।

उपरोक्त आलेख के विषय में जिज्ञासाओं के समाधान, प्रज्ञा अभियान सदस्यता विधि, शान्तिकुञ्ज के बैंक खाते नम्बर जानने के लिए संपर्क कीजिए - व्हॉट्सएप 9258369413

जाग्रत् संवेदनाओं के प्रभाव से सम्पन्न हुए सत्प्रवृत्ति संवर्धन के कार्यक्रम

डॉ. नरेंद्र अग्रवाल, महानिदेशक परिवार कल्याण की सेवाओं का अभिनंदन

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान को गति देने के लिए पारित कर चुके हैं ऐतिहासिक आदेश

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

दिनांक 2 नवंबर को डॉ. नरेंद्र अग्रवाल, महानिदेशक परिवार कल्याण का सेवा निवृत्ति समारोह सम्पन्न हुआ। उन्होंने इस समारोह में गायत्री परिवार के प्रतिनिधि डॉ. सुधीर श्रीवास्तव एवं श्रीमती सुमित्रा श्रीवास्तव को विशेष रूप से आमंत्रित किया था। श्रीवास्तव दम्पति ने गायत्री परिवार की ओर से गायत्री मंत्र का दुपट्टा एवं युग साहित्य भेंट कर स्वस्थ दीर्घ जीवन एवं उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना के साथ डॉ. नरेन्द्र अग्रवाल का अभिनंदन किया।

डॉ. नरेन्द्र अग्रवाल का उत्तर प्रदेश में 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' अभियान के विस्तार में महान और अविस्मरणीय योगदान है। कुछ दिनों पूर्व उनके द्वारा ही वह ऐतिहासिक आदेश पारित

डॉ. अग्रवाल का अभिनन्दन करते डॉ. सुधीर जी

किया गया था, जिसमें गर्भ संस्कार के विज्ञान को चिकित्सकों, आशा वर्करों, ए.एन.एम., स्वास्थ्य कर्मियों एवं गर्भवतियों को गायत्री परिवार के प्रशिक्षित कार्यकर्त्ताओं द्वारा प्रशिक्षण देने का निर्देश दिया गया है। इस आदेश के प्रभाव से पूरे प्रदेश में आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान का बृहद् स्तर पर विस्तार होगा।

सेवा निवृत्ति समारोह का आरंभ 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान की राष्ट्रीय संयोजन, भूतपूर्व स्वास्थ्य चिकित्सा महानिदेशक उत्तर प्रदेश एवं शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि डॉ. गायत्री शर्मा के वीडियो संदेश के साथ हुआ। उन्होंने अपने संदेश में डॉ. नरेन्द्र अग्रवाल से मिले सहयोग के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्हें शान्तिकुञ्ज आने का भावभरा आमंत्रण भी दिया।

डॉ. अग्रवाल ने गायत्री परिवार के अभियान को गति देने में हर संभव सहयोग का आश्वासन दिया है। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सीमा अग्रवाल पहले से ही आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी में अपना सहयोग दे रही हैं।

बुजुर्गों और बीमारों के संग बाँटीं दीपावली की खुशियाँ

मुम्बई। महाराष्ट्र :

दिया, मुम्बई के सदस्यों ने श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी का जन्मदिवस 'चेतना दिवस' और दीपावली समारोह जे.जे. अस्पताल के पारसी वार्ड में बुजुर्गों के बीच मनाया। 80 से 90 वर्ष तक के बुजुर्गों के बीच जीते-जागते दिये के रूप में पहुँचे और अपने प्यार और सेवाओं से भावविभोर कर दिया। दिया सदस्यों द्वारा साझा किये गए परम पूज्य गुरुदेव के विचारों ने बुजुर्गों के हृदय को एक ओर वात्सल्य से भर दिया, वहीं

उनमें सद्भाव और आशाओं का संचार किया।

भावविभोर कर देने वाला था समारोह

दिया सदस्यों में पारसी वॉर्ड परिसर को सुंदर रंगोलियों से सजाया। दीपक और मोमबत्तियाँ जलाए गए। गायत्री महामंत्र के समवेत उच्चारण से बने दिव्य वातावरण में दीपयज्ञ सम्पन्न करते हुए सभी बुजुर्गों के स्वस्थ, सुखी एवं सफल जीवन के लिए प्रार्थनाएँ की गईं।

बुजुर्गों पर फूल बरसाये। बुजुर्गों ने भी अपनी संगीत प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए हिंदी और अंग्रेजी में ऐसे-ऐसे गाने गाए, जिनसे आज की युवा पीढ़ी परिचित भी नहीं है। प्रेरक कहानियाँ और जीवन के संस्मरण साझा किये गए। बुजुर्गों को फल, मेवे, मिठाइयाँ आदि तथा उनके स्वास्थ्य में उपयोगी वस्तुएँ उपहारस्वरूप भेंट किये गए। वहाँ के कर्मचारियों एवं सेवकों को भी उपहार दिये गए। इस अनूठे उत्सव को देख सभी अत्यंत गद्गद थे।

सुश्री सुचिता शेट्टी ने सभी युवाओं एवं विद्यार्थियों को अपने घर, पड़ोस और पूरे समाज में बुजुर्गों की देखभाल करने की शपथ दिलाई।

इस पारसी वॉर्ड के आधुनिकीकरण के सूत्रधार रहे श्री अर्नवज मिस्त्री ने कहा कि इस कार्यक्रम ने बुजुर्गों और युवाओं के बीच संबंधों का एक नया अध्याय लिखा है। आपका प्रेम और आपकी प्रार्थनाएँ यहाँ के निवासियों को सतत ऊर्जा देती रहेंगी।

नशामुक्त अमेठी अभियान को मिल रहा महिलाओं व बच्चों का समर्थन

अमेठी। उत्तर प्रदेश :

गायत्री परिवार अमेठी द्वारा 20 अक्टूबर 2024 को त्रिलोकपुर ग्रामसभा में नशामुक्त अमेठी अभियान चलाया गया। कार्यकर्त्ताओं ने पूरे गाँव में घर-घर संपर्क कर लोगों को नशे से होने वाले आर्थिक, शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक और सामाजिक नुकसान के बारे बताया और उनसे अपनी झोली फैलाकर बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू, गांजा, चिलम, गुटखा, शराब का दान माँगा। कई लोगों को गायत्री मंत्रोच्चार के साथ कभी नशा न करने का संकल्प दिलाया गया।

समग्र अभियान में बच्चों और महिलाओं की भागीदारी बहुत उत्साहजनक थी। प्राथमिक विद्यालय दूबेपुर व उच्च प्राथमिक विद्यालय टेरी के बच्चों के हाथों में नशा छोड़ने की प्रेरणा देने वाली तख्तियां थीं। गाँव की महिलाएँ बड़े उत्साह के साथ नारे लगाते हुए नशावृत्ति का प्रतिरोध कर रही थीं।

गायत्री परिवार की ओर से श्री ओम प्रकाश ओझा, श्री रामशंकर पाठक तथा शिक्षक श्री विवेक मिश्रा ने सभा को संबोधित किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य आनंद कुमार पांडेय के साथ-साथ गांव के संभ्रांत जनों ने भी इस अभियान की प्रशंसा की।

त्रिलोकपुर के घर-घर पहुँच रहा व्यसनमुक्ति संदेश

कार्यक्रम का संचालन डॉ. धर्मेंद्र तिवारी ने किया।

जिला स्तरीय दीपोत्सव : जिलाधिकारी ने सतत वृक्षारोपण अभियान की सराहना की

जहानाबाद। बिहार

दीपावली पर्व के उपलक्ष्य में दिनांक 4 नवम्बर को जिला पदाधिकारी जहानाबाद एवं जिले के सभी वरीय पदाधिकारी की गरिमामयी उपस्थिति में जिला प्रशासन जहानाबाद के द्वारा दरधा एवं यमुना नदी के संगम पर नमामि गंगे अभियान के तहत दीपोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रज्ञा युवा प्रकोष्ठ जहानाबाद के द्वारा वैदिक मंत्रों के उच्चारण के साथ हजारों दीपक जलाये गए। इन जगमगाते दीपों की साक्षी में जिलाधिकारी महोदय एवं डीडीसी महोदय ने जलस्रोतों के शुद्धिकरण और उन्हें स्वच्छ बनाए रखने की प्रेरणाएँ लोगों को दी। उन्होंने इस अवसर पर गायत्री परिवार के वृक्षारोपण अभियान का विशेष रूप से उल्लेख किया और इसमें यथासंभव सहयोग का आश्वासन भी दिया। उन्होंने कहा कि गायत्री परिवार निःस्वार्थ भाव से समाज की सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहता है।

जिले के अधिकारियों के संग गायत्री परिवार के युवा

मौसमी बीमारियों से सुरक्षा के लिए काढ़ा वितरण

बूँदी। राजस्थान

28 अक्टूबर 2024 को धन्वन्तरि जयंती पर्व के उपलक्ष्य में गायत्री शक्तिपीठ बूँदी पर लोगों को मौसमी बीमारियों से बचाने के लिए निःशुल्क काढ़ा वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। 100 से अधिक नगरवासियों ने इन सेवाओं का लाभ लिया। महिला मंडल प्रभारी श्रीमती उषा शर्मा ने बताया कि डॉ. दीपाली, डॉ. समरीन एवं डॉ. ऐमन ने इस कार्य के लिए अपनी निःशुल्क सेवाएँ दीं।

डॉ. दीपाली माहेश्वरी प्रत्येक गुरुवार को गायत्री शक्तिपीठ पर चिकित्सा परामर्श के लिए निःशुल्क सेवाएँ भी प्रदान करती हैं।

शक्तिपीठ बूँदी में काढ़ा वितरण

गतिशील हो रहा आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान

साकोली, भंडारा। महाराष्ट्र

वैनगंगा कॉलेज ऑफ फिजिकल एजुकेशन, साकोली में 14 अक्टूबर 2024 को 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' विषय पर कार्यशाला सम्पन्न हुई। इसमें साकोली तहसील की सभी आशा सेविकाओं, सुपरवाइजर्स, ए.एन.एम., तहसील समूह संगठक, तहसील कार्यक्रम सहायक, तहसील आरोग्य अधिकारी, मेडिकल सुप्रिंटेण्डेंट एवं गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया।

कार्यशाला को आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान की प्रांतीय सह समन्वयक सुषमा अग्रवाल, सीमा अग्रवाल एवं भंडारा जिले की समन्वयक नीता शक्करवार ने संबोधित किया। उन्होंने गर्भ का विज्ञान, गर्भवती की दिनचर्या, गर्भावस्था में आहार, गर्भ संवाद जैसे अनेक विषयों की जानकारी श्रोताओं को दी।

इस कार्यशाला से भंडारा जिले के सिविल सर्जन बहुत प्रभावित हैं। उनकी सहमति से अब तक जिले की भंडारा, मोहाडी और साकोली तहसील में कार्यशालाएँ सम्पन्न हो चुकी हैं। उन्होंने अन्य तहसीलों में भी यह कार्यक्रम आयोजित करने की अनुमति प्रदान की। कार्यक्रम में सोमदत्त कंरजेकर, व्यवस्थापक वैनगंगा बहुउद्देश्यीय विकास संस्था तथा उनके सभी कर्मचारियों का प्रशंसनीय सहयोग मिला।

गौसंवर्धन दीपयज्ञ तथा गौपालकों का सम्मान

गायत्री परिवार द्वारा सम्मानित किए गए गौपालक

पुणे। महाराष्ट्र : गायत्री संस्कार केंद्र मुंढवा ने गोपाष्टमी के दिन गौसंवर्धन दीपयज्ञ के साथ गौपालकों का सम्मान किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री गौधाम महातीर्थ पथमेड़ा के प्रतिनिधि श्री जितेन्द्र सिंह थे। जिसमें 33 कोटि देवता का वास है ऐसी पावन गौमाता की सेवा एवं संरक्षण के संकल्प श्रोताओं में उभारे गए। वर्तमान में गौसेवा करने वाले गौपालकों का युगसाहित्य देकर सम्मान किया गया।

बुजुर्गों से मिला भरपूर आशीर्वाद

बस्ती। उत्तर प्रदेश : दिया, बस्ती के सदस्य वृद्ध आश्रम बस्ती में बुजुर्गों के संग दिवाली मनाने पहुँचे। उन्होंने बुजुर्गों को मिठाई खिलाई, 'मुस्कुराते रहो' स्टिकर एवं गायत्री चालीसा आदि भेंटकर उनके स्वस्थ, आनन्दित जीवन की प्रार्थना की। गायत्री परिवार के इन युवाओं को बड़े-बुजुर्गों से भरपूर आशीर्वाद मिला। उन्होंने अपने सगे बच्चों के समान स्नेह वर्षा करते हुए स्वागत किया और फोटो खिंचाते हुए इन अविस्मरणीय पलों को सँजोया। ऐसा प्रेम पाकर सभी युवक स्वयं को भी धन्य अनुभव कर रहे थे।

कैंसर के रोगियों के साथ खुशियाँ बाँटी

खारघर, नवी मुंबई। महाराष्ट्र

दीपावली और श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव जी के जन्मदिन-चेतना दिवस के उपलक्ष्य में गायत्री परिवार खारघर के नैष्ठिक कार्यकर्त्ता 30 अक्टूबर 2024 को खारघर के सेक्टर 20 स्थित संत घाडगे महाराज जी बोर्डिंग होम फॉर कैंसर पेशेंट्स में पहुँचे। वहाँ उन्होंने देश के विभिन्न हिस्सों से आए कैंसर के मरीज और स्टाफ के साथ दीपावली का उत्सव मनाते हुए हारे-थके लोगों को अपार खुशियाँ प्रदान कीं।

मरीजों के साथ मिलकर दीपयज्ञ किया। रोगियों और उनके परिवार के सदस्यों को मंत्र लेखन नोटबुक और गायत्री चालीसा दीं। तत्पश्चात् प्रसाद एवं उपहार का वितरण किया। आश्रम को 18 बैठने की कुर्सियाँ भी दान कीं।

कैंसर के मरीजों की सेवा में पहुँचे गायत्री परिवार के युवा

अब आप 01334-311001 पर फोन कर शान्तिकुञ्ज की नई स्वचालित फोन व्यवस्था (आईवीआर) से शान्तिकुञ्ज के विभिन्न विभागों से सीधा सम्पर्क कर सकते हैं।

राष्ट्र चेतना को झकझोरते, आत्मोत्थान व समाज निर्माण की प्रेरणा देते आयोजन

44 गाँवों की भागीदारी, 263 दीक्षा संस्कार हुए

संभल। उत्तर प्रदेश

प्राचीन शिव मंदिर इंटर कॉलेज जयरामनगर, जिला संभल के प्रांगण में दिनांक 17 से 20 अक्टूबर 2024 की तिथियों में 51 कुण्डीय राष्ट्र जागरण गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ में 5000 से 7000 लोगों की प्रतिदिन भागीदारी रही। इसे सम्पन्न कराने शान्तिकुञ्ज से श्री राम तपस्या जी की टोली पहुँची थी।

कार्यक्रम का आरंभ 2400 कलशों की शोभायात्रा के साथ हुआ। तीन ओर से यह यात्रा निकाली गई, जिसमें जय घोष, नारों, सप्त आंदोलन की झाँकियों के साथ 22 गाँवों की बहिनों ने मस्तक पर कलश धारण कर पूरे क्षेत्र को नवजागृति का संदेश दिया। 263 दीक्षा, दो दर्जन यज्ञोपवीत और दो दर्जन अन्य संस्कार संपन्न हुए। सभी दीक्षित कार्यकर्त्ताओं के मण्डल गठन कर संगठन को सुदृढ़ किया गया।

युग साहित्य प्रज्ञा केंद्र की स्थापना होगी

यज्ञ स्थल पर विराट पुस्तक मेला लगाया गया था। प्रज्ञा मंडल जयरामनगर खलीलपुर ने बताया कि इस यज्ञ से बची धनराशि से एक युग साहित्य प्रज्ञा केंद्र आरंभ करने का निर्णय लिया गया है, जिसके माध्यम से कार्यकर्त्ताओं

संभल के महायज्ञ में दीक्षा ले रही बहिनें

एवं ग्रामवासियों को परम पूज्य गुरुदेव का समस्त साहित्य स्वाध्याय के लिए उपलब्ध हो सकेगा।

121 गाँवों में युग चेतना का विस्तार

इस यज्ञ के प्रयाज के क्रम में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि योगाचार्य श्री राम सिंह यादव के मार्गदर्शन में ज्ञानरथ के साथ 121 गाँवों में युग चेतना का विस्तार करने में सफलता मिली। उन्होंने प्रतिदिन सैकड़ों लोगों को आसन, प्राणायाम, मुद्राओं का अभ्यास कराया और रोगों से सहज मुक्ति के लिए योगाभ्यास बताये। गायत्री शक्तिपीठ बबराला, गायत्री शक्तिपीठ दिनौरा और गायत्री प्रज्ञापीठ खलीलपुर का इस यज्ञ की सफलता में पूर्ण सहयोग रहा।

24 कुण्डीय महायज्ञ 320 दीक्षा संस्कार हुए

शाहबाद, रामपुर। उ.प्र. : तहसील शाहबाद के ग्राम खेदली में दिनांक 5 से 8 नवम्बर की तिथियों में आयोजित श्रीमद् भागवत प्रज्ञा पुराण कथा एवं 24 कुंडीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। इसमें चार दिनों में 320 भाई-बहिनों ने दीक्षा संस्कार कराया। 150 बच्चों का विद्यारंभ, 25 का नामकरण संस्कार हुआ। 62 लोगों ने नशा छोड़ा।

प्रथम दिन 1500 परिजनों के साथ भव्य शोभायात्रा निकली। थाना प्रभारी शाहबाद पंकज पंत ने कार्यक्रम सम्पन्न कराने शान्तिकुञ्ज से गई श्री सूरत सिंह अमृते की टोली का स्वागत किया।

शान्तिकुञ्ज के टोली नायक ने यज्ञ की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए विज्ञान और बुद्धि के विकास की चर्चा की। उन्होंने कहा कि विज्ञान के चमत्कार ने आज मनुष्य को गुफाओं से निकालकर आधुनिक भवनों और बड़े शहरों में पहुंचा दिया है, परंतु जीवन में शांति का अभाव है, जो यज्ञ परंपरा के लुप्त होने का परिणाम है।

आयोजक मंडल के सदस्य राजपाल गुप्ता, गजेंद्र कुमार शर्मा (चौबेजी), कृष्णकांत शर्मा, प्रदीप भारद्वाज, कुलदीप शर्मा, अनिल शर्मा और संजीव श्रीवास्तव ने यज्ञ की सफलता में मुख्य भूमिका निभाई।

ग्रामवासियों को दीक्षा दिलाते शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि

15 गाँवों में होंगे 5-5 कुण्डीय यज्ञ

खेदली के कार्यक्रम में 15 गाँवों में युवा मंडल का गठन हुआ। यज्ञ की पूर्णाहुति में लगभग 22 गाँवों के लोगों ने संकल्प लिया कि हम माता जी की जन्म शताब्दी तक अपने-अपने गाँव में 5-5 कुंडीय यज्ञ कराएंगे।

बहुत लोकप्रिय हो रही है गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ की परम्परा

सारंगढ़। छत्तीसगढ़ : दिनांक 27 अक्टूबर 2024 को गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान के अंतर्गत ग्राम गोड़ा में एक ही दिन, एक समय में 151 घरों में गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। जिला समन्वयक श्री गोरा प्रसाद साहू जी के नेतृत्व में यह कार्यक्रम संपन्न हुआ। 150 से अधिक कार्यकर्त्ताओं ने इस अभियान को सफल बनाने के लिए अपना भावभरा योगदान दिया।

जिला कार्यक्रम प्रभारी श्री रामचरण सिदार ने बताया कि यह प्रयोग अत्यंत प्रेरक और अनुकरणीय सिद्ध हुआ। सारंगढ़ जिला क्षेत्र में अब कई ग्रामों में 51 से 151 घरों में एक साथ यज्ञ होने लगे हैं। डभरा ब्लॉक मालखरौदा क्षेत्र के ग्राम हसौद में 108 घरों में यज्ञ हुए। क्रमशः अगले रविवारों में ग्राम छातादई एवं भटगाँव (बिलाईगढ़) में में 108-108 और ग्राम सरिया में 51 घरों में सामूहिक यज्ञ कराना निश्चित हुआ था। इन कार्यक्रमों के साथ देव स्थापना, साहित्य स्थापना, संस्कार आदि कार्यक्रम भी सम्पन्न हो रहे हैं।

ग्राम चेतना जगाने निकल पड़ी युग पुरोहितों की टोली

यज्ञकुण्ड में दी अपनी और अपने जीवन साथी की बुराइयों की आहुति

अमेठी। उत्तर प्रदेश

आज परिवार टूट रहे हैं, छोटे-छोटे शहरों में वृद्धाश्रम खुल रहे हैं। सामाजिक मान्यताएँ और परम्परायें टूट रही हैं। ऐसी विषम परिस्थितियों में वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी के क्रान्तिकारी विचारों को लेकर गायत्री परिवार 'परिवार निर्माण' से 'राष्ट्र निर्माण' की कड़ी जोड़ने के लिए गाँव-गाँव, घर- घर पहुँच रहा है।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री दिनेश पटेल ने गायत्री शक्तिपीठ अमेठी में 27 अक्टूबर को आयोजित नव दम्पति सम्मेलन में भाग ले रहे सैकड़ों दम्पतियों को संबोधित करते हुए यह उद्गार व्यक्त किये। उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव द्वारा बताये गए 'गृहस्थ एक तपोवन है।' सूत्र की व्याख्या करते हुए परिवार में संयम, सेवा, सहिष्णुता, सहकार व स्नेह की भावना को प्रोत्साहित करने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि पति पत्नी एक-दूसरे का सहयोग करते हुए परिवार में सुव्यवस्था, श्रमशीलता, सहकारिता, मितव्ययता एवं शालीनता सुनिश्चित करें तो परिवार स्वर्ग बनता चला जायेगा।

दम्पति शिविर

शान्तिकुञ्ज की संगीत टोली द्वारा गाये गए प्रज्ञागीत 'भारत की परिवार व्यवस्था ही रत्नों की खान है...' आदि बहुत उत्साहवर्धक और लोकप्रिय रहे। श्री कैलाश नाथ तिवारी ने वर-वधु की प्रतिज्ञाएँ दोहरवाईं। सभी दम्पतियों को यह शपथ पत्र और परिवार निर्माण संबंधी युग साहित्य उपहारस्वरूप भेंट किये गए।

कार्यक्रम को प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ के प्रतिनिधि प्रभाकर सक्सेना व जिला समन्वयक डॉ. त्रिवेणी सिंह ने भी संबोधित किया। सभी दंपत्तियों ने इस कार्यक्रम की भूरि-भूरि सराहना की।

अपने जीवन साथी का मंगलतिलक करते युगल

यह सम्मेलन अमेठी में 18 से 22 मार्च 2025 की तिथियों में आयोजित होने जा रहे राष्ट्र जागरण 251 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के प्रयाज के क्रम में आयोजित किया गया था।

कुछ विशेष प्रयोग भी हुए जैसे कि अपनी और अपने जीवन साथी की एक-एक बुराई को एक पर्चे पर लिखने तथा उसे छोड़ने के भाव से यज्ञकुण्ड में भस्म कर देने के लिए कहा गया।

प्रज्ञा अभियान के लिए ब्रह्मभोज योजना

इस अंक के पृष्ठ 2 पर मिशन को जन-जन तक, घर-घर तक पहुँचाने में प्रज्ञा अभियान की आवश्यकता और उपयोगिता पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। **गायत्री ज्ञानयज्ञ शाखा प्रयागराज** इस दिशा में सन् 2019 से ही क्रांतिकारी कार्य कर रही है। यह शाखा वर्तमान में पूरे देश में 50,000 लोगों तक निःशुल्क प्रज्ञा अभियान पहुँचा रही है।

ज्ञानयज्ञ शाखा प्रयागराज का लक्ष्य परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी-2026 तक अपने सौजन्य से **एक लाख लोगों को** प्रज्ञा अभियान का सदस्य बनाना है। प्रज्ञा अभियान के माध्यम से परम पूज्य गुरुदेव के विचारों को दूर-दराज के उन क्षेत्रों तक पहुँचाना है, जहाँ अभी मिशन विकसित नहीं हो पाया है। यह शाखा उन प्राणवान परिजनों, शाखाओं का भी सहयोग करेगी, जो मिशन को घर-घर पहुँचाने के लिए तत्पर हैं लेकिन आर्थिक सहयोग चाहते हैं।

योजना इस प्रकार है :-

- ब्रह्मभोज योजना का लाभ उन्हें ही मिलेगा, जो एक पते पर 100 प्रज्ञा अभियान मँगायेंगे।
- उन्हें सदस्यता शुल्क की आधी राशि ₹4000/- सीधे 'प्रयागराज ज्ञानयज्ञ ब्रह्मभोज योजना' शान्तिकुञ्ज के बैंक खातों में जमा करानी होगी। जमा की गई राशि का प्रूफ और पता ई-मेल या व्हॉट्सएप से शान्तिकुञ्ज एवं प्रयागराज शाखा दोनों को भेजना होगा। शेष राशि ₹4000/- ज्ञानयज्ञ शाखा प्रयागराज द्वारा शान्तिकुञ्ज में जमा कराई जाएगी।

केवल 31 दिसंबर 2024 तक की योजना :-

लाभार्थियों के पते शान्तिकुञ्ज में 31 दिसम्बर 2024 से पूर्व दे दिये जाने हैं, अतः इस योजना का लाभ केवल उन्हें ही मिल सकेगा, जो इस अवधि से पूर्व धनराशि जमा कराकर उसकी सूचना प्रयागराज शाखा को दे देते हैं।

आवश्यक जानकारियाँ :-

- श्री देवव्रत साहा राय, व्हॉट्सएप, मोबाइल : 9415638196 (गायत्री ज्ञानयज्ञ शाखा प्रयागराज के संयोजक)
- प्रज्ञा अभियान कार्यालय, शान्तिकुञ्ज 01334 311004 अथवा 9258369725

सदस्यता शुल्क निम्न खातों में ऑनलाइन जमा किया जा सकता है।

बैंक खाते का नाम – श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी)

पंजाब नेशनल बैंक : 469 4002 1000 00572 (16 डिजिट) IFSC Code: PUNB0469400

एक्सिस बैंक : 914 0200 3171 1542 (15 डिजिट) IFSC Code: UTIB0000156

एचडीएफसी बैंक : 094 3145 0000 037 (14 डिजिट) IFSC Code: HDFC0000943

एसबीआई : 3063 1606 578 (11 डिजिट) IFSC Code: SBIN0010588

इनमें से किसी भी खाते में पत्रिका सदस्यता शुल्क जमा करने के बाद भुगतान पत्र की कॉपी व्हॉट्सएप या मोबाइल से ई-मेल (pragyaabhiyan@awgp.in) द्वारा शान्तिकुञ्ज को तथा श्री देवव्रत साहा जी को भेजनी होगी। (प्रज्ञा अभियान ब्रह्मभोज योजना प्रयागराज अवश्य लिखें।)

प्रबुद्ध युवाओं ने गायत्री मंत्र की दीक्षा ली

घेटकी, नवसारी। गुजरात

प्रकाश पर्व दीपावली के पावन दिन 1 नवम्बर 2024 को चीखली तहसील में स्थित गायत्री प्रज्ञापीठ घेटकी में 3 कुण्डीय गायत्री यज्ञ के माध्यम से विशेष संस्कार समारोह आयोजित हुआ। इसमें 11 प्रबुद्ध युवाओं ने गायत्री महामंत्र की दीक्षा ली। इनमें डॉक्टर, आईटी. इंजीनियर, संगीत विशारद पुरस्कार प्राप्त एवं पोस्ट ग्रेजुएट युवा थे।

बिलीमोरा के वरिष्ठ परिजन श्री कृष्णकांत टिकरिया ने बताया कि ये वे विशेष युवक-युवती हैं, जिन्होंने गायत्री उपासना के प्रत्यक्ष लाभ अनुभव किये हैं। गायत्री मंत्र जप, चालीसा पाठ जैसी उपासना विधियों से किसी ने अपनी मानसिक स्थिति में सुधार अनुभव किया तो किसी को स्वास्थ्य में अप्रत्याशित लाभ मिला। श्री कृष्णकांत टिकरिया जी ने इन युवाओं को गायत्री उपासना से सतत अपने व्यक्तित्व का परिष्कार करने और युगऋषि के अग्रदूत बनकर उनके विचारों को समाज में प्रतिष्ठित करने की मार्मिक प्रेरणाएँ प्रदान कीं। उन्हें चलती-फिरती शक्तिपीठ बनकर अन्य युवाओं का मार्गदर्शन करने, उन्हें व्यसनमुक्त करने की प्रेरणा दी।

प्रज्ञापीठ घेटकी में पू.गुरुदेव को गुरुरूप में वरण करते युवा

भावभरी श्रद्धाञ्जलि

घाटोटांड़, रामगढ़। झारखण्ड

गायत्री शक्तिपीठ घाटोटांड़ से जुड़े समर्पित कार्यकर्त्ता श्री दुर्गा प्रसाद जी का 8 अक्टूबर को 69 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे मुंगेर, बिहार के मूल निवासी थे और सन् 1989 से मिशन को अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे थे।

संत और सज्जनों के लिए यह शरीर तीर्थ है, जबकि दुराचारियों के लिए यही एक नर्क भी है। - महात्मा गाँधी

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में इस वर्ष 42 लाख विद्यार्थियों ने भाग लिया

विभिन्न प्रान्त, जिले और विद्यालयों में सम्पन्न कराई जा रही भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा

कक्षा 5 से महाविद्यालय तक के विद्यार्थियों को वैज्ञानिक अध्यात्मवाद एवं भारत के वैभवशाली सनातन सांस्कृतिक गौरव से जोड़ने वाली और बच्चों को सकारात्मकता, सृजनात्मकता एवं संस्कारों का पाठ पढ़ाने वाली अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा आयोजित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में इस वर्ष 42 लाख छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। यह संख्या गत वर्ष की तुलना में 25 प्रतिशत अधिक बताई जा रही है। उल्लेखनीय है कि यह परीक्षा अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में भाग लेने वाले छात्र-छात्राओं के लिए भी सहायक सिद्ध हो रही है।

नया पाठ्यक्रम

इस वर्ष अधिकांश राज्यों में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा नए पाठ्यक्रम के अंतर्गत आयोजित हुईं। नए पाठ्यक्रम को भारत सरकार की नई शिक्षा नीति के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक बनाने के लिए तैयार किया गया है। इसके कारण पूर्व वर्षों की तुलना में इस वर्ष अधिक उत्साह के साथ छात्रों एवं विद्यालयों की भागीदारी हुई है।

निरंतर बढ़ रहा है उत्साह

देश के कोने-कोने से उत्साहवर्धक समाचार लगातार प्राप्त हो रहे हैं। गुजरात के दिव्यांग छात्रों ने भी भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में भाग लिया। सुदूर अंचल के आदिवासी क्षेत्र और पूर्वोत्तर राज्यों के दूरवर्ती क्षेत्रों में भी इस परीक्षा के प्रति उत्साह बढ़ता जा रहा है।

अनुवर्ती कार्यक्रम

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में भाग लेने वाले अनेक विद्यालय बच्चों में संस्कार संवर्धन के कार्यक्रमों को भी अपना रहे हैं। विद्यालयों में परम पूज्य गुरुदेव के क्रान्तिकारी सद्वाक्य लगाए जा रहे हैं। संस्कृति मंडलों का गठन हो रहा है, जिनके माध्यम से जन्मदिन, वृक्षारोपण, सामूहिक स्वच्छता अभियान जैसे कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। विद्यार्थियों के प्रतिभा परिष्कार शिविर, शिक्षक गरिमा शिविर की लोकप्रियता बढ़ रही है।

भावभरे सहयोग के प्रति आभार

परीक्षा का आयोजन तीन चरणों में क्रमशः सितम्बर, अक्टूबर और नवम्बर में हुआ। परीक्षा के आयोजन में शिक्षा मंत्रालय, राज्य स्तर पर हजारों प्रशासनिक अधिकारियों, विद्यालयों एवं शिक्षकों का भावभरा सहयोग मिला। इतनी बड़ी सफलता में नैष्ठिक परिजनों ने प्रमुख भूमिका निभाई, जिन्होंने केवल परीक्षा केन्द्रों की व्यवस्था ही नहीं सँभाली, बल्कि चिलचिलाती गर्मी और बरसात में विद्यालयों में व्यापक जनसंपर्क कर उन्हें सहमत किया और व्यवस्थाएँ बनाईं। शान्तिकुञ्ज में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रभारी श्री रामयश तिवारी ने उन समस्त सहयोगियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया है।

प्रान्तवार संख्या

राजस्थान	9,08,755
उत्तरप्रदेश	9,55,494
मध्यप्रदेश	6,69,676
गुजरात	7,02,602
छत्तीसगढ़	2,70,545
झारखण्ड	1,91,062
उत्तराखण्ड	91,535
हरियाणा	54,817
महाराष्ट्र	85,533
हिमाचल	47,219
तेलंगाना	7,568
बिहार	62,847
बंगाल	13,158
दिल्ली	59,432
ओडिशा	44,111
पंजाब	8,630
केरल	4,300
पूर्वोत्तर राज्य	12,900

संस्कृति मंडल के गठन से हो रहा है नवसृजन आन्दोलन का विस्तार

युवा चेतना जागरण का प्रभावशाली प्रयोग

गरियाबंद। छत्तीसगढ़

गायत्री परिवार भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा और उसके माध्यम से संस्कृति मंडलों का गठन करते हुए विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास का विराट अभियान चला रहा है। इसी क्रम में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मुरमुरा में शिक्षक श्री कुलदीप कृष्ण भारती, जो कि प्रांतीय बाल संस्कार शाला अभियान के प्रभारी हैं, ने उक्त विद्यालय में संस्कृति मण्डल का गठन कर अत्यंत प्रशंसनीय और अनुकरणीय सफलता प्राप्त की है।

श्री भारती बताते हैं कि उनके हायर सेकेण्डरी स्कूल में प्रार्थना में गायत्री मंत्रोच्चारण, सामूहिक ध्यान और बौद्धिक चर्चा तो होती ही है, नवीं एवं दसवीं कक्षाओं के खाली कालखण्डों का उपयोग कर व्यक्तित्व निर्माण युवा शिविर के विषयों को भी प्रस्तुत किया जाता है। बहुत से युवा विद्यार्थी इन शिक्षाओं से बहुत प्रभावित हुए हैं, जिनको मिलाकर विद्यालय में संस्कृति मण्डल का गठन किया गया है। संस्कृत मंडल में बच्चों को परस्पर चर्चा का अवसर देकर उनकी नेतृत्व क्षमता विकसित की जा रही है। गाँवों में नशामुक्ति रैली के प्रभावशाली आयोजन हो रहे हैं।

संस्कृति मण्डल के विद्यार्थियों द्वारा अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम तैयार किये गए हैं। इन्हें विभिन्न पर्व-जयंतियों पर और सामाजिक कार्यक्रमों में प्रदर्शित कर लोगों को सत्प्रेरणाएँ दी जा रही हैं।

इस वर्ष गरियाबंद में हुए व्यक्तित्व निर्माण युवा शिविर में बड़ी संख्या में बच्चों ने भाग लिया। उनके सहयोग से आसपास के तीन गाँवों में बाल संस्कारशालाएँ चलाई जा रही हैं। गाँव की दो बहनें युवा शिविर में कक्षाएँ लेती हैं तथा बाल संस्कारशाला का प्रशिक्षण देती हैं।

संस्कृति मण्डल की विविध गतिविधियों में भाग ले रहे विद्यार्थी

आयोजित हो रही हैं युवा उत्कर्ष कार्यशालाएँ

खारघर। मुंबई

खारघर, मुंबई में विवेकानंद युवा मंडल और गायत्री परिवार नवी मुंबई द्वारा एक दिवसीय आध्यात्मिक कार्यशाला 'युवा उत्कर्ष' का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम बच्चों के चरित्र निर्माण, स्मृति विकास, और सामाजिक मूल्यों पर आधारित इंटरैक्टिव गतिविधियों से परिपूर्ण था। मुख्य रूप से बच्चों को अधिकतम अंक प्राप्त करने के तरीके, साहस, विनम्रता, कृतज्ञता, मन और स्मृति विकास, सोशल मीडिया, समझदारी जैसे विषयों पर मार्गदर्शन दिया गया। कार्यशाला में आईक्यू-ईक्यू आधारित प्रश्नोत्तरी शामिल थीं। प्रेरक वीडियो पर आधारित क्विज के विजेताओं को परम पूज्य गुरुदेव की पुस्तकें उपहार स्वरूप दी गई।

कार्यक्रम का उद्घाटन श्री रजनीश प्रकाश, पूर्व अध्यक्ष, भारी पानी बोर्ड, बार्क और नवी मुंबई गायत्री परिवार के समन्वयक डॉ. ए.एन. वर्मा ने किया। समापन दीपयज्ञ के साथ हुआ। सभी बच्चों को विदाई के रूप में पुस्तक 'लूज नॉट योर हार्ट' भेंट की गई।

एक अन्य कार्यशाला

विवेकानंद युवा मंडल, खारघर, नवी मुंबई द्वारा 9 नवंबर 2024 को भी इसी प्रकार की युवा उत्कर्ष कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें 12 से 19 वर्ष तक के नवी मुंबई उप जोन के पनवेल, कामोठे, खारघर, तलोजा और उल्वे के 40 छात्रों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। सभी प्रतिभागियों और परिवार के सदस्यों ने हर माह में ऐसी कार्यशालाएँ आयोजित करने का आग्रह किया।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में 8950 विद्यार्थियों ने लिया भाग

देवास। । मध्य प्रदेश

9 नवंबर को आयोजित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में देवास जिले के 185 केंद्रों पर कुल 8950 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी। परीक्षा संयोजक श्री देवीशंकर तिवारी और मिडिया प्रभारी श्री विक्रम सिंह चौधरी ने बताया कि जिले की नौ तहसीलों में कक्षा 5 से कॉलेज स्तर तक के परीक्षार्थी शामिल हुए। परीक्षा समिति ने आयोजन में सहयोगी सभी परिजनों और शिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त किया गया।

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

इंदौर। मध्य प्रदेश : इंदौर के वयोवृद्ध कार्यकर्त्ता श्री राधेश्याम आचार्य तथा श्री रमेशचंद्र राजपूत का देहावसान हो गया। स्व. श्री आचार्य जी ने भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के जिला संयोजक के रूप में भी सेवाएँ प्रदान कीं। अनेक वर्षों तक मिशन की सेवा करने के बाद 84 वर्ष की आयु में उन्होंने जीवन की अंतिम साँस ली।

स्व. आचार्य जी, स्व. राजपूत जी

श्री रमेशचंद्र राजपूत पुलिस विभाग में पुलिस सब इंस्पेक्टर, इंस्पेक्टर, पुलिस उप अधीक्षक आदि पदों पर सेवाएँ देते हुए भी परम पूज्य गुरुदेव के सच्चे शिष्य की भूमिका निभाते रहे। वे गायत्री शक्तिपीठ केसरबाग रोड, इंदौर के साथ जुड़कर पूज्य गुरुदेव की विचारधारा से लोगों को जोड़ते रहे।

निभाई नेत्रदान की पुण्य परंपरा

श्री महेन्द्र कुमार गुप्ता, मेरठ। उत्तर प्रदेश

स्व. गुप्ता जी

गायत्री परिवार मेरठ के वयोवृद्ध परिजन श्री महेंद्र कुमार गुप्ता, मुरारीपुरम का दिनांक 4 नवम्बर को 85 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। उन्होंने मरणोपरांत भी परमार्थ की पुण्य परंपरा का अनुसरण करते हुए अपने नेत्रदान का संकल्प लिया था, तद्नुसार उनके दोनों नेत्र लाला लाजपत राय मेडिकल कॉलेज के आई बैंक को दान कर दिये गए।

श्रीमती कुमारी बाई साहू, भिलाई। छत्तीसगढ़ : रिसाली, भिलाई निवासी मिशन की कार्यकर्त्ता बहिन श्रीमती कुमारी बाई साहू का दिनांक 9 नवम्बर 2024 को 55 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे 30 वर्षों से अधिक समय से मिशन की सेवा में संलग्न थीं। 1993 में संपन्न भिलाई अश्वमेघ यज्ञ में और 1911 में सम्पन्न जन्म शताब्दी समारोह में उन्होंने विशेष सेवाएँ प्रदान कीं।

श्री समरेन्द्र नारायण सिंह, उत्तरी दिल्ली : उत्तरी दिल्ली शाखा के साथ जुड़कर मिशन का विस्तार कर रहे श्री समरेन्द्र नारायण सिंह का दिनांक 29 अक्टूबर 2024 को देहावसान हो गया। स्व. श्री समरेन्द्र जी ने सुमधुर वाणी में प्रज्ञा गीतों के माध्यम से और मिशन की विभिन्न पत्रिकाओं का वितरण करते हुए समाज पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। वे अपनी धर्मपत्नी श्रीमती मधु सिंह और तीन बच्चों के साथ रहते हुए दिल्ली में अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे थे।

नैष्ठिक कार्यकर्त्ता के श्रद्धांजलि समारोह में उभरे सृजनात्मक संकल्प

कथारा, बोकारो। झारखण्ड

बोकारो के जिला समन्वयक श्री धनेश्वर महतो एवं जिला युवा समन्वयक श्री पंचदेव यादव का दिनांक 2 सितम्बर 2024 को एक सड़क दुर्घटना में निधन हो गया। गोमियाँ प्रखण्ड गायत्री परिवार ने गायत्री ज्ञान मंदिर कथारा में 27 अक्टूबर को उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए एक सभा आयोजित की। इस सभा में गायत्री परिवार की ओर से श्री लखनलाल प्रजापति, श्री बुधन प्रसाद वर्मा, श्री सच्चिदानंद सिंह सहित सभी कार्यकर्त्ताओं ने उन्हें भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित की। स्थानीय विधायक एवं कई जननेताओं ने भी उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी समाजसेवा की सराहना की।

दिवंगत स्वजनों को सांत्वना देते वरिष्ठ शाखा परिजन

- सांसद श्री रविंद्र कुमार पाण्डेय एवं वयोवृद्ध परिजन श्री बी.पी. अग्रवाल ने दिवंगत आत्माओं की स्मृति में श्वेत और रक्त चंदन के पौधे लगाये।
- अगले वर्ष 108 कुण्डीय यज्ञ के साथ श्रद्धांजलि समारोह का संकल्प लिया गया। गोमियाँ एवं नवाडीय प्रखण्ड में शताब्दी वर्ष के निमित्त 24 स्थानों में पंच कुण्डीय यज्ञ का संकल्प उभरा।
- स्थानीय गायत्री परिवार ने भावनाशीलों के सहयोग से दोनों दिवंगत देवात्माओं के परिवारीजनों के भरण-पोषण एवं देखरेख की व्यवस्था भी की है।

मनुष्य का जीवन क्षणिक है, पर आत्म-सुधार उसे अनन्त तक फैला देता है। -इमर्सन

युगतीर्थ की दिव्य चेतना के सान्निध्य में नई स्थापनाएँ, उभरी सत्प्रेरणाएँ

गायत्री चेतना केन्द्र निर्माण के लिए भूमिपूजन

हमारा लक्ष्य इमारतों का नहीं, व्यक्तित्वों का निर्माण है।

- आदरणीय डॉ. चिन्मय जी

आद. डॉ. चिन्मय जी चेतना केन्द्र का शिलान्यास करते हुए

दतिया। मध्य प्रदेश : देसंविवि के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी दिनांक 7 नवम्बर को दतिया पहुँचे। वहाँ उन्होंने गायत्री चेतना केन्द्र निर्माण के लिए भूमि पूजन किया। इस अवसर पर उन्होंने चेतना केन्द्र के निर्माण को सार्थक एवं लोकप्रिय बनाने के लिए कार्यकर्त्ताओं का विशेष आह्वान किया। उन्होंने कहा कि हमारा उद्देश्य इमारतों का निर्माण नहीं, बल्कि व्यक्तित्वों का निर्माण है। आज दुनिया भर में विभिन्न धर्मों के लोग गायत्री परिवार से जुड़कर अपने व्यक्तित्व को निखारते हुए न केवल यशस्वी जीवन जी रहे हैं, बल्कि समाज का मार्गदर्शन भी कर रहे हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह चेतना केन्द्र भी उत्कृष्ट व्यक्तित्वों को गढ़ने की टकसाल बनेगा। भूमिपूजन समारोह में इंदरगढ़, झाँसी, ग्वालियर, डबरा सहित कई स्थानों से आए परिजनों ने हिस्सा लिया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी दतिया में भूमिपूजन समारोह को संबोधित करते हुए

108 कुण्डीय राष्ट्र जागरण गायत्री महायज्ञ

पीड़ा-पतन निवारण को जीवन लक्ष्य बनाना सच्चा यज्ञ है।

जतारा, टीकमगढ़। मध्य प्रदेश

जीवन राम छात्रावास, जतारा के मैदान में 108 कुण्डीय राष्ट्र जागरण गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ में दिनांक 7 नवम्बर को अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा आदर्श आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की उपस्थिति ने हजारों श्रोताओं में नव उल्लास का संचार किया। विशाल जनमेदिनी को संबोधित करते हुए उन्होंने राष्ट्र के नवनिर्माण के लिए युवा सक्रियता बढ़ाने तथा समाज को नशामुक्त बनाने पर विशेष बल दिया। **कार्यक्रम में भाग ले रहे सभी लोगों को नशामुक्त जीवन जीने तथा समाज को नशामुक्त बनाने में सहयोग करने के संकल्प भी दिलाए गए।**

समारोह में भारत सरकार में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के मंत्री डॉ. वीरेन्द्र कुमार खटीक भी मंचासीन थे। उन्होंने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा ने हमेशा हमें उन्नति का मार्ग दिखाया है। हमें अपनी संस्कृति को समझना तथा उस पर गर्व करना चाहिए।

देवमंच पर डॉ. चिन्मय जी के संग केन्द्रीय मंत्री डॉ. वीरेन्द्र खटीक

यज्ञ की बड़ी मार्मिक व्याख्या करते हुए डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि मानवीय गुणों को अपने अंदर आत्मसात कर मानवता की पीड़ा को दूर करना आज का यज्ञ है। त्याग, प्रेम, सहकार जैसे गुणों को अपनाकर पतन निवारण को अपने जीवन का लक्ष्य बनाना इस विराट यज्ञ का उद्देश्य है।

इससे पूर्व आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने सर्वप्रथम यज्ञ परिसर में ध्वजारोहण और प्रखर प्रज्ञा, सजल श्रद्धा का पूजन किया। कार्यक्रम सम्पन्न कराने शान्तिकुञ्ज से श्री परमेश्वर साहू की टोली पहुँची थी।

प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन

भारतीय ज्ञान परम्परा को सारा विश्व समाधान की दृष्टि से देख रहा है। - शांतिकुञ्ज

दमोह। मध्य प्रदेश

प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, ज्ञानचंद श्रीवास्तव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दमोह में आयोजित 'भारतीय ज्ञान परंपरा' विषय पर आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का उद्बोधन रखा गया था। बड़ी संख्या में युवा, प्रबुद्ध जन एवं परिजन इस सभा में उपस्थित थे।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने श्रोताओं को भारतीय संस्कृति और ज्ञान परंपरा का बोध कराते हुए कहा कि पतन सहज है, लेकिन सृजन और निर्माण के लिए जिस संघर्ष, साहस और संकल्प शक्ति की आवश्यकता होती है, उसके पोषण के सूत्र हमारी संस्कृति में निहित हैं। आज सारा विश्व हमारी संस्कृति और ज्ञान परम्परा को विश्व की समस्याओं के समाधान की दृष्टि से देख रहा है। यह समय हमें जो मिला है, उसे सौभाग्य में बदलने का अवसर है।

सभा मंच पर शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि के साथ मध्य प्रदेश शासन के मंत्री माननीय श्री धर्मेंद्र सिंह लोधी, स्थानीय सांसद माननीय श्री राहुल सिंह और पूर्व मंत्री डॉ. रामकृष्ण कुसमरिया सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

दमोह के सम्मेलन में मंचासीन गणमान्य और माननीय मंत्री जी को स्मृति चिह्न भेंट करते डॉ. चिन्मय जी

डॉ. रामकृष्ण कुसमरिया जी से मुलाकात

पूज्य गुरुदेव के नैष्ठिक शिष्य डॉ. रामकृष्ण कुसमरिया जी से मुलाकात

दमोह में प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन के पश्चात् आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी मिशन के प्रति अनन्य भाव से समर्पित परम पूज्य गुरुदेव के शिष्य, मध्य प्रदेश पिछड़ा आयोग के अध्यक्ष और मध्य प्रदेश सरकार में मंत्री रहे डॉ. रामकृष्ण कुसमरिया जी से मुलाकात के लिए उनके साकौर स्थित आवास पर गये।

आंतरिक श्रद्धा की अभिव्यक्ति के पर्व के रूप सम्पन्न हुआ

गायत्री आश्रम पड़खुरी में प्राण प्रतिष्ठा समारोह

सीधी। मध्य प्रदेश

सुरम्य पहाड़ियों, हरेभरे वृक्षों एवं अरण्य से घिरे गायत्री आश्रम पडखुरी में 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ शक्तिपीठ का प्राण प्रतिष्ठा समारोह सम्पन्न हुआ। दिनांक 9 नवम्बर को आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने शक्तिपीठ में प्रतिष्ठित माँ गायत्री, माँ लक्ष्मी एवं माँ सरस्वती की प्रतिमाओं में प्राण प्रतिष्ठा की। इस अवसर पर समारोह में उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए उन्होंने इस दिवस को आंतरिक श्रद्धा की अभिव्यक्ति का दिवस बताया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कहा कि श्रद्धा इस दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति और पूँजी है। अपनी श्रद्धा को गुरु चरणों में लगाकर उनकी इच्छा की पूर्ति में जीवन लगाना सच्ची गुरुभक्ति है। पड़खुरी में शक्तिपीठ की प्राण प्रतिष्ठा के साथ परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी की दिव्य चेतना का साक्षात अवतरण हुआ है, यह पावन धरा धन्य हो गई है। यह युगचेतना बघेलखण्ड के सम्पूर्ण परिक्षेत्र को गायत्रीमय कर गायत्री आश्रम पड़खुरी को युग निर्माण योजना के एक महत्त्वपूर्ण आधारभूत केन्द्र के रूप में स्थापित करेगी। प्राण प्रतिष्ठा समारोह में सीधी, रीवा, सतना, टीकमगढ़, दमोह, पन्ना, ग्वालियर, देवास और जयपुर से आए प्राणवान कार्यकर्त्ताओं की उपस्थिति रही। शान्तिकुञ्ज से पहुँची श्री परमानंद द्विवेदी की टोली ने इसे सम्पन्न कराया।

गायत्री आश्रम पड़खुरी पहुँचे और प्रतिमाओं में माँ गायत्री, लक्ष्मी और सरस्वती की प्राण प्रतिष्ठा करते आदरणीय डॉ. चिन्मय जी

पीताम्बरा पीठ, दतिया और माँ विंध्यवासिनी, मिर्जापुर में दर्शन-पूजन

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी अपने इस प्रवास में दो प्राचीन पीठों के दर्शन, पूजन के लिए भी गये। दिनांक 7 नवम्बर को मध्य प्रदेश के दतिया जिले में स्थित पीतांबरा पीठ में एवं दिनांक 9 नवम्बर को उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में विंध्याचल पर्वतमाला में स्थित आद्य महाशक्ति माँ विंध्यवासिनी के दर्शन के लिए पहुँचे। इन प्राचीन शक्तिपीठों के दर्शन कर उन्होंने समाज में सुख, शान्ति एवं सबके उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना की।

पीतांबरा पीठ में और माँ विंध्यवासिनी के मंदिर में दर्शन-पूजन

ज्ञान की सार्थकता तब है, जब वह कर्म रूप में परिणत हो।

उत्तर प्रदेश के विशिष्ट कार्यक्रमों में वरिष्ठ शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि की भागीदारी

108 कुण्डीय राष्ट्र जागरण गायत्री महायज्ञ में श्रद्धालुओं को जन्मशताब्दी के निमित्त सक्रियता के संकल्प दिलाए

देसंविवि के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय जी मऊ में उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए

मऊ। उत्तर प्रदेश : आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी 9 नवम्बर को गायत्री शक्तिपीठ मऊ द्वारा आयोजित 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में भाग ले रहे हजारों परिजनों एवं प्रबुद्ध जनों के बीच पहुँचे। वहाँ उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव का अमृत संदेश देते हुए श्रद्धालुओं में युग निर्माणी आस्थाओं का संचार किया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि मनुष्य जीवन ईश्वर का सर्वोत्तम उपहार है। इसमें अनंत संभावनाएँ विद्यमान हैं। गायत्री महामंत्र की उपासना से मनुष्य जीवन देवत्व की ओर अग्रसर होता जाता है। परम पूज्य गुरुदेव और परम वंदनीया माताजी के आशीर्वाद से आज जीवन की श्रेष्ठतम संभावनाओं को साकार करने का जो अवसर हमें प्राप्त हुआ है, उस अवसर को हमें पहचानना चाहिए और उसका पूरा-पूरा लाभ उठाते हुए अपने जीवन को श्रेष्ठता की ओर अग्रसर करने के लिए सार्थक कदम बढ़ाने चाहिए। ऐसा सुयोग कई जन्मों के बाद मिल पाता है, जब स्वयं महाकाल की सत्ता गुरुरूप में हमारी ऊँगली पकड़कर अपनी राह चलाती है।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने जन्मशताब्दी वर्ष-2026 को राष्ट्र जागरण की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण समय बताया। उन्होंने सभी को महाकाल की योजना को पूरा करने में पूरी निष्ठा के साथ जुट जाने की प्रेरणा दी और संकल्प भी दिलाए। इस कार्यक्रम को सम्पन्न कराने शान्तिकुञ्ज से श्री सुनील शर्मा की टोली पहुँची थी।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने यज्ञ स्थल पर धर्मध्वजारोहण किया और देव संस्कृति दिग्दर्शन पर आधारित प्रदर्शनी का उद्घाटन भी किया।

'प्रखर प्रज्ञा, सजल श्रद्धा' का लोकार्पण

श्रद्धा को सक्रियता में बदल कर नवसृजन में जुट जाने का आह्वान

गाजीपुर। उत्तर प्रदेश : अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा युगनायक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी 10 नवम्बर को गायत्री शक्तिपीठ गाजीपुर पहुँचे। वहाँ श्रद्धालुओं ने उनका जोरदार स्वागत किया। वे शक्तिपीठ में 'प्रखर प्रज्ञा, सजल श्रद्धा' का लोकार्पण करने पहुँचे थे। इस अवसर पर उन्होंने शक्तिपीठ में नवनिर्मित कक्षों और युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी के जीवन-दर्शन पर आधारित प्रदर्शनी का उद्घाटन भी किया।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने इस अवसर पर दूर-दूर से आए श्रद्धालुओं को 2026 के आगामी आयोजन से जुड़े अद्भुत संयोगों की जानकारी दी। उन्होंने श्रद्धा को सक्रियता में बदलते हुए नवसृजन अभियान को नई ऊँचाइयों तक ले जाने का आह्वान किया। उन्होंने गायत्री महामंत्र की वैज्ञानिकता पर प्रकाश डालते हुए इसे जीवन को उन्नत बनाने का मार्ग बताया।

युवा प्रभारी श्री क्षितिज श्रीवास्तव ने युवाओं को अपने में भौतिक और आध्यात्मिक जीवन में संतुलन स्थापित करते हुए सफलता प्राप्त करने की प्रेरणा दी।

पवहारी बाबा की समाधि पर पुष्पांजलि

10 नवंबर को आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की टोली गाजीपुर, उत्तर प्रदेश स्थित सुप्रसिद्ध संत पवहारी बाबा के दिव्य आश्रम में पहुँची, उनकी समाधि पर पुष्पांजलि अर्पित की। वहाँ उन्हें बाबा के जीवन, उनकी समाधि और हस्तलिपि का दर्शन कराया गया। उन्होंने बाबा के हाथों से बने ऐतिहासिक कुएँ के भी दर्शन किए। अपनी भावनाएँ व्यक्त करते हुए शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने कहा कि भारत की सनातन परम्परा ऐसे तपस्वी ऋषियों की सदैव ऋणी रहेगी।

मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश के अनेक गायत्री शक्तिपीठों में पहुँचा युग चेतना का प्रवाह

गायत्री शक्तिपीठ दमोह में स्वागत, आत्मीयता संवर्धन

गायत्री शक्तिपीठ पन्ना में परिजनों को संबोधन

गायत्री शक्तिपीठ बेलहारी में दर्शन, पूजन और स्वजनों के बीच प्रस्तुत अपनों से अपनी बात

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी दिनांक 7 से 10 नवम्बर की तिथियों में मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के प्रवास पर थे। इन चार दिनों में उन्होंने दतिया, दमोह, पड़खुरी, मऊ एवं गाजीपुर में भूमिपूजन, प्राण प्रतिष्ठा, लोकार्पण के बड़े समारोहों में भागीदारी की। इन चार दिनों में मुख्य कार्यक्रमों के अलावा रास्ते में कई शक्तिपीठ, शाखाएँ पड़ीं। वे वहाँ रुके, शक्तिपीठ/प्रज्ञापीठों में माँ गायत्री का दर्शन-पूजन किया और समस्त समाज की सुख, शान्ति, प्रगति एवं राष्ट्र के उत्थान की प्रार्थनाएँ कीं।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने सभी जगह स्वजनों को संबोधित किया। उन्हें परम पूज्य गुरुदेव, परम वंदनीया माताजी, श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी के साथ आत्मीयतापूर्ण संबंधों की याद दिलायी। अपने प्यार भरे विनम्रतापूर्ण व्यवहार से उन संबंधों का एहसास कराया। वरिष्ठ शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि को अपने बीच पाकर परिजन अत्यंत भावविभोर दिखाई दिये।

ग्वालियर : 7 नवम्बर को प्रवास का शुभारंभ ग्वालियर से हुआ। स्थानीय कार्यकर्त्ताओं और प्रांतीय स्तर के वरिष्ठ जनों ने हवाई अड्डे पर उनका भावभरा स्वागत किया।

मऊरानीपुर : दिनांक 7 नवम्बर को दतिया से टीकमगढ़ की ओर जाते समय गायत्री शक्तिपीठ मऊरानीपुर में पहुँचकर माँ गायत्री के दर्शन किये और स्थानीय परिजनों से भेंटकर उनका उत्साहवर्धन-मार्गदर्शन किया।

टीकमगढ़, बकस्वाहा, दमोह

8 नवम्बर को आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस में हुई जनसभा में पहुँचने से पूर्व गायत्री शक्तिपीठ टीकमगढ़, गायत्री प्रज्ञापीठ बकस्वाहा तथा गायत्री शक्तिपीठ दमोह के दर्शन किये। दमोह में पहुँचने पर वहाँ के डीएम, एडीएम, एसएसपी और गायत्री परिवार के सदस्यों ने उनका भावभरा स्वागत किया। वे दमोह में बड़ी देवी मंदिर भी गए और वहाँ देवी-दर्शन करते हुए सबके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

हटा : अगला पड़ाव दमोह जिले के ही हटा नामक नगर में था। उन्होंने गायत्री शक्तिपीठ हटा में जाकर दर्शन, पूजन किया और परिजनों से भेंट की।

पन्ना : गायत्री शक्तिपीठ पन्ना पहुँचे, दर्शन-पूजन के पश्चात् परिजनों से भेंट-परामर्श का क्रम चला। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने उन्हें मानव सेवा, वृक्षारोपण, स्वच्छता, और सामाजिक सेवा के कार्यों में सहभागिता बढ़ाने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि गुरुदेव के आदर्शों पर चलते हुए लोकमंगल के लिए की गई सेवाएँ ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी के मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश प्रवास में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री रामावतार पाटीदार, श्री गोपाल शर्मा व श्री विपुल पटेल तथा जोन समन्वयक श्री राजेश पटेल साथ रहे।

बेलहाई, रीवा : पड़खुरी से पूर्व आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी रीवा जिले में स्थित गायत्री शक्तिपीठ बेलहाई पहुँचे, वहाँ परिजनों के साथ आत्मीयतापूर्ण संवाद कर उनकी श्रद्धा, सक्रियता को नवगति प्रदान की।

प. पूज्य गुरुदेव के विचारों से प्रभावित हुआ किन्नर समाज

शान्तिकुञ्ज के कार्यकर्त्ताओं का एक दल समय-समय पर हरिद्वार, ऋषिकेष सहित विभिन्न स्थानों में अलग-अलग समुदायों के बीच परम पूज्य गुरुदेव के विचारों को पहुँचा रहा है। इसी क्रम में यह दल 9 अक्टूबर को हरिद्वार में किन्नर समुदाय के बीच पहुँचा। उन्हें 'आत्मा न नर है, न नारी' और 'जीवन देवता की साधना आराधना' जैसी पुस्तकें भेंट करते हुए भेदभाव की हर प्रकार की मानसिकता से ऊपर उठकर जीवन की गरिमा को समझने एवं उसका सदुपयोग करने तथा आध्यात्मिक उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहने की प्रेरणा दी। उन्हें 'गायत्री महामंत्र लेखन' पुस्तिकाएँ भी दी गईं।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों से मिलकर किन्नर समुदाय गद्गद था। समुदाय की अध्यक्ष पायल जी ने गुरुदेव के साहित्य को अपने मस्तक से लगा कर अपनी सद्भावनाएँ व्यक्त कीं और आशा की कि उनकी कृपा तथा उनके विचारों के माध्यम से किन्नर समुदाय भी समाज के उत्थान में उल्लेखनीय योगदान दे सकेगा।

साहित्य भेंट करते शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि

साधना की बुनियाद पर हो रहा है आरण्यक का निर्माण

मंदिर निर्माण के लिए ईंटों का पूजन और उनके समक्ष अनुष्ठान

नैमिषारण्य, सीतापुर। उत्तर प्रदेश

इस वर्ष आश्विन नवरात्र में गायत्री परिवार के अनेक साधकों ने निर्माणाधीन श्रीराम साधना आरण्यक नैमिषारण्य में रहते हुए लघु साधना अनुष्ठान सम्पन्न किये। निर्माण कार्य समन्वयक श्री जीतेन्द्र द्विवेदी की प्रेरणा से इस अवसर पर अभिनव प्रयोग भी किया गया। सभी साधकों ने गायत्री मंदिर निर्माण के निमित्त 24 ईंटों को सुंदर कपड़ों में सजाकर उनका विधिवत पूजन किया और फिर उन्हें पूजा वेदी पर स्थापित कर उनके समक्ष अनुष्ठान सम्पन्न किया। साधकों ने मंदिर निर्माण के लिए अपना अंशदान भी दिया।

शिलापूजन करते नैष्ठिक गायत्री साधकगण

अपने पुरुषार्थ से अर्जित ऐश्वर्य का ही दूसरा नाम भाग्य है। - डिजरायली

गंगातट पर 51,000 दीप जलाकर मनाया उत्तराखण्ड राज्य स्थापना का रजत जयंती पर्व

उत्तराखण्ड के आध्यात्मिक, सामाजिक, सांस्कृति वैभव की रक्षा और सतत विकास में भागीदारी के संकल्प लिए

हरिद्वार में उत्तराखण्ड राज्य के 25वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 11 नवम्बर को हर की पैड़ी क्षेत्र में विराट दीपोत्सव का आयोजन हुआ। सायंकाल गंगा आरती के समय हर की पैड़ी के दोनों ओर लगभग दो किलोमीटर क्षेत्र में 4,00,000 दीप प्रज्वलित किए गए। पूरा क्षेत्र जलते दीपों की दिव्यता से जगमगा रहा था।

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज की राज्य स्थापना के रजत जयंती समारोह में विशेष भागीदारी रही। शान्तिकुञ्ज के आश्रमवासी, शिविरार्थी साधकों एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के शिक्षक, विद्यार्थियों ने मिलकर जयराम आश्रम पुल, शिव स्वरूप आश्रम, राम चबूतरा, श्याम होटल, आशापुरा जोधपुर भोजनालय, कांगडा पुलिया, वीआईपी घाट, विवेकानंद पार्क के घाटों पर लगभग 51,000 दीप प्रज्वलित किए। 2,000 से अधिक स्वयंसेवक इस दीपोत्सव में शामिल हुए।

उत्तराखण्ड स्थापना के दीपोत्सव में शान्तिकुञ्ज की भागीदारी निराली थी। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, श्रद्धेया शैल जीजी और आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने प्रदेश के वरिष्ठ नेतृत्व एवं अधिकारियों सहित सभी प्रदेशवासियों को शुभकामनाएँ देते हुए राज्य के आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं समग्र विकास में बढ-चढ़कर भागीदारी का आश्वासन दिया। शान्तिकुञ्ज और हरिद्वार, देहरादून, टिहरी गढ़वाल सहित राज्य के सभी जिलों में स्थित समस्त प्रज्ञा संस्थानों में भी दीपोत्सव मनाया गया।

हर की पैड़ी पर मनाया गया विशाल दीपोत्सव अद्भुत था। वहाँ केवल दीप ही नहीं जले, युग निर्माणी केसरिया वस्त्रों में पहुँचे कार्यकर्त्ता भी अपने संकल्प और उल्लास की निराली आभा बिखेर रहे थे। सबने मिलकर घाटों को तरह-तरह की रंगोलियों से सजाया और उनपर दीप जलाए। दीपोत्सव को दीपयज्ञ की भाँति मनाया गया। पूरे क्षेत्र में साउंड सिस्टम लगाया गया, जिसके माध्यम से अंतःकरण में उमंग जगाते प्रेरणादायी प्रज्ञागीत बजाये गए। गायत्री महामंत्र और महामृत्युंजय मंत्र से आहुतियाँ दी गईं। देवभूमि उत्तराखण्ड के आध्यात्मिक, सांस्कृतिक वैभव की रक्षा हेतु अपने योगदान के संकल्प लिये गए।

दीपोत्सव का यह कार्यक्रम युवा युगनायक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। वे आदरणीया शेफाली जीजी के संग प्रत्येक गंगाघाट तक गए, दीप जलाये, आरती की, कार्यकर्त्ताओं का उत्साह बढ़ाया।

विशिष्ट गणमान्यों को दिया राष्ट्र जागरण गायत्री महायज्ञ में भागीदारी का आमंत्रण

डॉ. चिन्मय जी ने क्रमशः श्री नड्डा जी, डॉ. हिरेन जोशी, श्री ज्ञानेश कुमार एवं कोटेचा जी को भेंट किये संस्कृति के प्रतीक

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी नवम्बर 2024 के प्रथम सप्ताह में दिल्ली प्रवास पर थे। इस अवसर पर वे कई गणमान्यों से व्यक्तिगत रूप से मिले और उन्हें 20 से 24 नवम्बर 2024 की तिथियों में सेक्टर 8, द्वारिका, दिल्ली में आयोजित हो रहे 251 कुण्डीय राष्ट्र जागरण गायत्री महायज्ञ में आमंत्रित किया।

माननीय श्री जे.पी. नड्डा जी

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री जगत प्रकाश नड्डा जी से उनके आवास पर पहुँचकर मुलाकात की। उल्लेखनीय है कि माननीय नड्डा जी शान्तिकुञ्ज और गायत्री परिवार के साथ बड़ी गहराइयों से जुड़े हैं। उन्होंने इसी भाव के साथ डॉ. चिन्मय जी का स्वागत करते हुए यज्ञ का आमंत्रण स्वीकार किया।

डॉ. हिरेन जोशी, प्रधानमंत्री जी के सलाहकार

प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी के संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मामलों के सलाहकार माननीय डॉ. हिरेन जोशी जी से मिले। उनके साथ भारतीय धर्म-संस्कृति के उत्थान सम्बंधी कई राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय विषयों पर चर्चा हुई। उन्हें युग साहित्य भेंट कर सम्मानित किया।

श्री ज्ञानेश कुमार, भारत के निर्वाचन आयुक्त

भारत के निर्वाचन आयुक्त माननीय श्री ज्ञानेश कुमार जी से हुई। दोनों के बीच गायत्री परिवार द्वारा संचालित आध्यात्मिक-सांस्कृतिक अभियानों पर विस्तृत चर्चा हुई।

वैद्य राजेश कोटेचा, आयुष मंत्रालय में सचिव

आयुष मंत्रालय में सचिव वैद्य राजेश कोटेचा जी से मुलाकात हुई। वे शान्तिकुञ्ज एवं गायत्री परिवार के सहयोग से आयुर्वेद के विकास, विस्तार के लिए कार्य करने के लिए बहुत उत्साहित थे।

राष्ट्रीय नदी संगम 2024

नदियों के संरक्षण पर केंद्रित भारत सरकार के आयोजन में शान्तिकुञ्ज की भागीदारी

नदियों के पुनरुद्धार के लिए समाज में हर व्यक्ति अपनी भूमिका निभाए।
- डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

मध्य में आदरणीय डॉ. चिन्मय जी, जलशक्ति मंत्री माननीय गजेन्द्र शेखावत जी, मुनि चिदानन्द जी साहित्य विमोचन करते हुए

नई दिल्ली : दिनांक 4 नवम्बर 2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में 'राष्ट्रीय नदी संगम 2024' का आयोजन संपन्न हुआ। भारत एवं मानवता के भविष्य को सँवारने के भाव से किये गए इस महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम में देशभर से विभिन्न धार्मिक, सामाजिक और पर्यावरणीय संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। उन्होंने नदियों के संरक्षण और पुनरुद्धार के लिए अपने विचार साझा किये।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार के प्रति कुलपति एवं अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा प्रतिनिधि आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी इस सम्मेलन में विशेष रूप से आमंत्रित थे। उन्होंने कहा कि नदियाँ केवल जल का स्रोत नहीं, हमारी संस्कृति की जीवनधारा हैं। नदी संरक्षण का अर्थ केवल पर्यावरण बचाना नहीं, बल्कि भावी पीढ़ियों के लिए एक शुद्ध और स्वस्थ भविष्य सुनिश्चित करना है। यह प्रयास तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक समाज का हर व्यक्ति इसमें अपनी भूमिका नहीं निभाता। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने श्रोताओं को जलस्रोतों के संरक्षण के लिए अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा किये गये भागीरथी प्रयासों की जानकारी भी दी।

भारत के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत, स्वामी चिदानंद सरस्वती (परमार्थ निकेतन), श्री रमाकांत जी (भारतीय नदी परिषद के अध्यक्ष) श्री मनु गौड़ जी और अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तित्वों की उपस्थिति में यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। सभी ने नदियों के संरक्षण के प्रति अपनी दृढ़ प्रतिबद्धता दोहराई और इस दिशा में ठोस और सामूहिक प्रयास करने का संकल्प लिया। इस अवसर पर शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने उपस्थित गणमान्य अतिथियों को परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य भेंट किया।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि आदरणीय डॉ. चिन्मय जी समारोह को संबोधित करते हुए

संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी करेंगे भारत का प्रतिनिधित्व

संयुक्त राष्ट्र द्वारा आयोजित जलवायु परिवर्तन सम्मेलन (एनएफसीसीसी सीओपी-29) में भारत का प्रतिनिधित्व देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति एवं अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा प्रतिनिधि आदरणीय डॉक्टर चिन्मय पण्ड्या जी करेंगे। यह सम्मेलन 11 से 22 नवंबर तक अजरबैजान की राजधानी बाकू में आयोजित हो रहा है, जिसमें दुनियाभर के नेता और विशेषज्ञ पर्यावरण से जुड़े महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर विचार करेंगे। अखिल विश्व गायत्री परिवार पर्यावरण संरक्षण में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। इसी के आधार पर आदरणीय डॉ. चिन्मय जी भारत की ओर से जलवायु परिवर्तन के समाधान और पर्यावरणीय स्थिरता पर अपने विचार साझा करेंगे।

नया साहित्य : श्रीमद्भागवत महापुराण (कथा सप्ताह)

हमारे समाज में कथाओं का बहुत प्रचलन है। इसीलिए परम पूज्य गुरुदेव ने वर्तमान युग की समस्याओं और आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए **प्रज्ञा पुराण** की रचना की है। अपने मिशन में प्रज्ञा पुराण का ही प्रचलन है और इसी को प्रोत्साहन दिया जाना है। तथापि परम्परागत रूप से श्रवण की जाने वाली भागवत कथाओं में भी युग चिंतन का समावेश किया जाना चाहिए। इस आवश्यकता को देखते हुए शान्तिकुञ्ज के वेद विभाग ने 'श्रीमद्भागवत महापुराण (कथा सप्ताह)' की रचना की है।

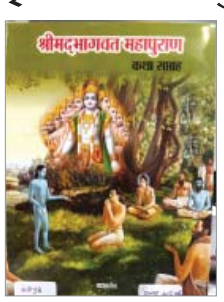

श्रीमद्भागवत महापुराण (कथा सप्ताह) 472 पृष्ठ का बड़े साइज में पक्की बाईंडिंग और आकर्षक कव्हर वाला ग्रंथ है। इसका मूल्य ₹450/- है, जो इन दिनों 20% छूट में उपलब्ध है।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित।
संपादक- प्रमोद शर्मा। **पता** :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 01334-311004
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.org
समाचार भेजने के लिए
ई-मेल : news@awgp.org

Publication date: 27.11.2024
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26